

श्री श्रीष चन्द्र दीक्षित

मुख्य परामर्शदाता  
पूर्व सांसद व पूर्व पुलिस महानिदेशक

*Jh HkkjrsUnq izdk'k fla?ky*

राष्ट्रीय प्रधान  
पूर्व सांसद ( राज्य सभा ) व पूर्व पुलिस महानिदेशक

मे . ज . ( से दृ नि . ) विष्वास स . जोगलेकर  
राष्ट्रीय कार्यकारी प्रधान

संपादक  
प्रो० सतीष चन्द्र  
संपादक मंडल

*MkW egs'k pUnz*

देवेन्द्र मित्तल, रामाश्रय उपाध्याय  
प्रो० श्री धर पन्त, डॉ० रामषरण गौड़

प्रकाषक व मुद्रक  
देवेन्द्र मित्तल ( उपप्रधान )  
प्रकाषन स्थान  
3308, सेक्टर-डी-3 वसंत कुंज,  
नई दिल्ली - 110070

११

११



## हिन्दुस्थान में देशद्रोह

### देशद्रोहियों को तत्काल दण्ड दिया जाए

‘राष्ट्रीय सहारा’ नई दिल्ली के 21 जुलाई 2009 के अंक में यह समाचार प्रकाशित हुआ है कि 26 नवम्बर 2008 को मुंबई में ताज होटल, छत्रपति शिवाजी रेल टर्मिनस आदि स्थानों पर जो आतंकवादी हमले हुए थे उनमें से जीवित बचे एकमात्र आतंकवादी मोहम्मद अजमल कसाब ने विशेष न्यायालय के समक्ष कहा - “मैं अपना जुर्म कबूल करता हूँ।” उल्लेखनीय है कि उक्त राष्ट्रद्रोही ने कराची (पाकिस्तान) से मुंबई तक पहुँचने की अपनी यात्रा का पूरा विवरण भी न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया।

उपर्युक्त समाचार पत्र में ही यह समाचार भी छपा है कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री अशोक चव्हाण ने कसाब को फाँसी देने की माँग की है। किन्तु विशेष लोक अभियोजक उज्ज्वल निकम ने इसे कसाब की नई चाल बताया है। इसका भावार्थ यह निकाला जा सकता है कि देशद्रोही को तत्काल दण्ड दिए जाने के बजाए उसे स्थान-स्थान पर घुमाया जाए और उसे जेलों में तब तक डबलरोटी और मक्खन के साथ मुर्गे खिलाए जाएं जब तक कि उसके साथी जेल से उसे भगा न लें।

यह सर्वविदित है कि दिल्ली में संसद् भवन पर आक्रमण के मुख्य आरोपी अफजल गुरु को उच्चतम न्यायालय से फाँसी का दण्ड सुनाए जाने के बाद भी अभी तक फाँसी इसलिए नहीं लगाई गई कि उसने राष्ट्रपति जी को दया की याचिका दे रखी है, जो कई वर्षों से विचाराधीन है। ऐसे ही देशद्रोह के अनेक मामले लटके हुए हैं जैसे अबु सलेम, दाउद इब्राहिम जिन्हें दण्ड नहीं मिल सका है।

‘दैनिक जागरण’ दिल्ली, दिनांक 22 जुलाई 2009 के समाचार पत्र में निम्नलिखित समाचार हमारे देश की दशा का वर्णन करने के लिए काफी है।

**‘सेना में भर्ती हो गए आई.एस.आई एजेंट’**

**‘लिपिकों ने फर्जी दस्तावेजों के सहारे कराई भर्ती’**

लगभग 3 वर्ष से अमेरिका सरकार के साथ परमाणु समझौता का शीत युद्ध हो रहा था और अंततोगत्वा समझौता हो गया जिसमें यह बताया गया था कि भारत के परमाणु प्रतिष्ठानों की निगरानी नहीं की जाएगी, किन्तु दैनिक जागरण, दिल्ली 22 जुलाई 2009 के अंक में निम्नलिखित समाचार देश के सामान्य नागरिक का रक्तचाप बढ़ाने के लिए काफी है, ऐसा हम समझते हैं।

हिलेरी क्लिंटन के साथ हुए समझौते को लेकर सवाल ज्यादा हैं और सरकार के पास जवाब कम। करार को लेकर अभी तक यह साफ नहीं हो सका है कि अमेरिका ने सालाना निरीक्षण की अपनी जिद पर कितना और किस हद तक समझौता किया है। इस मुद्दे पर यदि अमेरिका की चली तो भारत को अमेरिका से खरीदे सैनिक साजो सामान को अमेरिकी शर्तों के मुताबिक निगरानी के लिए मुहैया कराना होगा।

दैनिक जागरण, दिल्ली दिनांक 22 जुलाई 2009 में छपे समाचार के अनुसार “एयरपोर्ट सुरक्षा से जुड़े एक अधिकारी के मुताबिक 21 अप्रैल की रात्रि करीब पौने दस बजे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम कांटीनेंटल एयरलाइंस की फ्लाइट संख्या सीओ-083 से नेवार्क जाने के लिए इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट के एयरोब्रिज एरिया में पहुँचे थे। उस समय उनके साथ तमाम अधिकारियों के साथ सीआईएसएफ के एक इंस्पेक्टर एवं डॉ. कलाम के निजी सचिव और प्रोटोकाल अधिकारी भी थे। एयरलाइंस अधिकारियों ने जब डॉ. कलाम से सुरक्षा जांच के लिए जूते उतारने के लिए कहा तब, सीआईएसएफ के इंस्पेक्टर एवं उनके निजी सचिव ने इसका कड़ा विरोध किया। साथ ही कांटीनेंटल एयरलाइंस के सुरक्षा अधिकारियों को बताया कि डॉ. कलाम पूर्व राष्ट्रपति हैं एवं उन्हें सुरक्षा जाँच से छूट मिली है। लेकिन एयरलाइंस के सुरक्षा अधिकारियों ने सीआईएसएफ के इंस्पेक्टर एवं प्रोटोकाल अधिकारी से भी असम्मानजनक बर्ताव किया। सूत्रों के मुताबिक एयरलाइंस से जुड़े अधिकारियों का व्यवहार पूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलाम के लिए भी बहुत सम्मानजनक नहीं था। रात्रि करीब दस बजकर दस मिनट पर डॉ. कलाम सहृदय व्यक्तित्व का परिचय देते हुए बिना

किसी शिकायत के विमान में सवार हो। 21 अप्रैल को ही एयरपोर्ट सुरक्षा से जुड़ी एजेंसियों ने नागरिक उड्डयन मंत्रालय को इस घटना के संबंध में रिपोर्ट भेज दी थी, जो 22 अप्रैल की सुबह मंत्रालय के पास पहुँच गई थी। इस रिपोर्ट के मिलने के बाद भी नागरिक उड्डयन मंत्रालय ने इस विषय पर किसी तरह की कार्रवाई करने की जरूरत नहीं समझी।

इस पर मंगलवार को यह मामला राज्यसभा में शून्य काल में उठा। विपक्ष के नेता अरुण जेटली ने कहा कि यह घटना पूरे देश का अपमान है। सपा के प्रो. रामगोपाल यादव ने कहा कि इस तरह की घटना देश से बाहर तो हुई है लेकिन भारत की धरती पर पहली बार हुई है, इसलिए कम्पनी के खिलाफ तत्काल कार्रवाई होनी चाहिए।

साथ ही, सुरक्षा जांच के लिए कलाम पर दबाव बनाने वाले अधिकारी को उसके देश वापस भेजा जाना चाहिए। कांग्रेस की जयंती नटराजन् ने कहा कि घटना के दोषियों को जब तक सजा नहीं मिल जाती तब तक संबंधित विमानन कंपनी की उड़ाने रद्द कर देनी चाहिए। प्रफुल्ल पटेल ने कहा कि पूर्व राष्ट्रपति के साथ किया गया बर्ताव अक्षम्य है, क्योंकि उन्हें इस तरह की जाँच से छूट है। सुरक्षा जाँच उन पर लागू नहीं होती। घटना की जांच के आदेश दिए गए हैं और संबंधित कंपनी को कारण बताओ नोटिस भी जारी कर दिया गया है।

ऐसी घटनाओं के लिए जिम्मेदार एयरलाइंस कंपनी का कार्य क्या भारत में तत्काल रोका नहीं जा सकता था?

क्या इस घटना के लिए जिम्मेदार अधिकारियों को तुरंत हिन्दुस्थान छोड़ने के आदेश नहीं दिए जा सकते थे

क्या ऐसी कंपनी का पालम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर तत्काल कामकाज बंद नहीं किया जा सकता था ? आदि-आदि प्रश्न प्रबुद्धजनों के हृदय में कसमसा रहे हैं। क्या हमारे देश के राजनीतिबाजों और देश की आई.ए. एस. लॉबी में स्वाभिमान नाम कुछ शेष रह गया है या नहीं, यह प्रश्न भी कुलबुला रहा है ?

संपादक मंडल

## भारतीय जीवन मूल्य

### मोक्षदात्री क्षमता खोती गंगा

‘कलि के पांच हजार वर्ष पूरे होने पर गंगा भी पृथ्वी से चली जाएगी। भगीरथ के जिस तप की सिद्धि स्वरूप गंगा भूलोक पर आयी थीं, वह प्रयोजन तब तक पूरा हो चुकेगा। उसके बाद पृथ्वी पर गंगा की उपस्थिति सार्थक नहीं रह जाएगी।’ देवी भागवत पुराण में कलि के चरित्र और गंगावतरण प्रसंग में यह उल्लेख है। इस पौराणिक रूपक के अर्थ को खोजें तो प्रतीत होगा कि गंगा सचमुच पृथ्वी से लुप्त हो गई है। आत्मा के विदा होने पर शरीर जिस तरह देर तक सुरक्षित नहीं रहता, वैसे ही वर्तमान स्थितियों में गंगा का काय-कलेवर भी बहुत दिनों तक स्थिर नहीं रहने वाला नहीं लगता। अगर आज जैसी स्थिति कुछ साल और रही तो 2025-30 के आसपास लोग गंगा को मात्र एक नाले की शक्ल में देख रहे होंगे, ठीक उसी तरह जैसे यमुना, क्षिप्रा, चंबल, काली, सिंध आदि पहले की अपेक्षा में निरंतर क्षीण और क्षीणतर होती गई हैं।

गंगा भारत के लिए जल संपदा का स्रोत ही नहीं है, उसके किनारों पर भारत की संस्कृति विकसित हुई है। आश्रम, तपोवन, विद्या-केन्द्र और संस्कृति को बल देने वाली गतिविधियां गंगा के आसपास ही केन्द्रित रही हैं। इस केन्द्र के कारण गंगा को भारत की सुषुम्ना नाड़ी भी कहा गया है, जिसमें संचरित प्राणचेतना पूरे अस्तित्व को तरंगित करती है। अन्य नदियां जिस तरह अपने स्रोतों से निकलकर प्राकृतिक रूप में मैदानी भागों में बहने लगती हैं, उस तरह गंगा का जन्म नहीं हुआ है। गंगा उद्भव राजा भगीरथ द्वारा अपने पूर्वजों के उद्धार के लिए किए गए दीर्घकालीन आध्यात्मिक पुरुषार्थ का प्रतिफल है। उस प्रयोग के बाद जिन तरंगों और ऊर्जाओं से संपन्न होकर गंगा प्रकट हुई, उसे गंगावतरण जैसे महिमावान शब्द से संबोधित किया गया। सूक्ष्म अर्थों में भगीरथ का तप का अर्थ सोई हुई आत्माओं में जीवन का संचार है। वाल्मीकि रामायण में गंगावतरण के कथा प्रसंग में भगीरथ तप का स्वरूप बताते हुए पंचाग्नि तप की ओर संकेत किया गया है जिसमें कठोर तप के द्वारा अस्तित्व को पूरी तरह मथ देने और उससे प्राणदायी क्षमता उत्पन्न करने वाले पुरुषार्थ का संदेश है।

यू देखें तो लंबाई, गहराई, आयु और प्रवाह के कारण गंगा अनूठी नदी नहीं है। स्थूल दृष्टि से ब्रह्मपुत्र, अमेजन, नील और ह्वांगहो जैसी कई नदियां गंगा से बहुत विशाल हैं। उद्गम की दृष्टि से अन्य अनेक नदियां हिमालय से निकलती हैं और जो खनिज, औषधियां और प्रकृति का संसर्ग गंगा को मिला है, वह इन नदियों को भी मिला है इसके बावजूद दूसरी नदियों का जल गंगा की तरह प्राणवान नहीं हो पाया, न ही उन नदियों के पानी की इतनी महत्ता बढ़ी।

यद्यपि तट पर बसे शहरों के अपशिष्ट और उद्योगों के कचरे ने गंगा की उस प्राणऊर्जा को अब छीन लिया है और गंगाजल में अब पहले जैसी विशेषताएं नहीं रहीं, फिर भी भारत जैसे धर्मप्राण देश में पूजा-पाठ और यज्ञ अग्निहोत्र में गंगाजल का उपयोग आज भी सर्वत्र होता है। शुद्धिकरण और पापमुक्ति के लिए गंगाजल से समन्वित अनुष्ठानों का बड़ा विधान है। जन्म-मृत्यु, विवाह अर्थात् जीवन के प्रत्येक पड़ाव पर आने वाले संस्कारों में पृथ्वी के इस अमृत का उपयोग किया जाता है इसलिए पूजा-पाठ और साधनात्मक उपचारों में जल का उपयोग ज्यादा किया जाता है। दीक्षा, संस्कार, कर्मकांड, उपासना आदि में गंगा के उपयोग का इतना ही अर्थ है कि वह तटवर्ती क्षेत्रों में चलने वाले तप-अनुष्ठानों से चैतन्य किया होता है। इसके उपयोग के पीछे उद्देश्य गंगाजल की उस प्राण ऊर्जा या दिव्य विशेषता का लाभ उठाना है, जो उसमें निहित है।

अध्यात्मवेत्ताओं के अनुसार गंगाजल में यह सामर्थ्य किन्हीं प्राकृतिक कारणों या रासायनिक विशेषताओं के चलते नहीं आई, वरन उन आध्यात्मिक साधनाओं के कारण आई जो ऋषिस्तर की सत्ताओं ने इसके आसपास रहकर संपन्न की। प्रयाग के स्नान को सबसे अधिक पवित्र माना गया है। कारण यहाँ यमुना और सरस्वती भी गंगा में आकर मिलती हैं। हरिद्वार में भी गंगा बहुत पवित्र है। वाराणसी और समुद्र-संगम में स्नान भी मोक्षदायी माना जाता है। इन गंगातटों पर बने ऋषि-आश्रमों में धर्मतंत्र का गहन अनुसंधान हुआ था। साधकों ने अपने गुरु और मार्गदर्शक शक्तियों के प्रकाश में अपनी चेतना को विशिष्ट स्तर तक पहुँचाया था। चेतना तरंगों का वह प्रभाव उन तीर्थों के परिवेश में व्याप्त

रहा और उन तरंगों के संपर्क में जो भी आया, उसका रूपांतरण हुआ। इस प्रकार गंगाजल की मुख्य विशेषता उसकी आध्यात्मिक ऊर्जा है जो ऋषि चेतना के सान्निध्य से उत्पन्न हुई।

ऋषि कहते हैं कि गंगा स्नान से या गंगा के तट पर रहने से पाप नहीं धुलते वरन पाप उस सात्विक माहौल में मनःस्थिति में आए पश्चात्ताप के भाव के कारण धुलते हैं जो वहाँ तप करने वाले लाखों लोगों की चेतना की परम अवस्था को प्राप्त करने से बना। पाप धुलने का तात्विक अर्थ है चित्त का निर्मल होना। गंगा किनारे रहने वाले सिद्ध साधकों के संस्कार गंगाजल में यह सामर्थ्य बनाए रखते हैं। लौकिक दायित्वों से मुक्त होकर गंगा किनारे बसने या तीर्थ यात्रा पर जाने का चलन भी इसी उद्देश्य से रखा गया था।

सूक्ष्म विवेचनाओं से पौराणिक उल्लेखों का अर्थ समझने वाली दृष्टि मानती है कि पांच हजार वर्ष कलि के अपने चरम पर पहुँच जाने का प्रतीक है।

देवी भागवत के उन्हीं प्रसंगों में गंगा से पहले यमुना और सरस्वती के साथ अन्यान्य नदियों और तीर्थों के भी पृथ्वी छोड़कर चले जाने का उल्लेख है। उन प्रतिपादनों का अर्थ तीर्थों की व्यवस्था लड़खड़ा जाने व नदियों में प्राणतत्व समाप्त हो जाना ही है। प्रतीकात्मक अर्थों में कलियुग असंयम, अमर्यादा और अधीरता का नाम है। इन्हीं स्थितियों के चलते तीर्थों का वातावरण गड़बड़ाया है।

गंगा के तट पर बसे जिन नगरों में साधना, विद्या, तप, अनुष्ठान उपक्रम चलते थे, वहाँ अब भोग और शोषण की प्रवृत्तियाँ फल-फूल रही हैं। मठ और मंदिर लोगों की चेतना ऊपर उठाने के बजाए गर्त में धकेलने वाली प्रवृत्तियों के भोग-विलास के गढ़ बनते जा रहे हैं। कलि के जितने भी दोष गिनाए गए हैं, उनमें भोग और अमर्यादा ही मुख्य हैं। इनकी अति के चलते गंगा यदि अपनी मोक्षदात्री क्षमता खो चुकी है तो इसे गलत नहीं समझना चाहिए। उस प्राणवान गंगा को पुनः वापस लाने के लिए भगीरथ पुरुषार्थ एक बार फिर अनिवार्य हो गया है। आशुतोष शिव आज भी जटाएं खोले खड़े हैं, प्रतीक्षा तो भगीरथों की है।

*राष्ट्रीय संहारा, दिल्ली, दिनांक 25.5.2009 से साभार*

## कीटनाशकों का कहर झेलती कृषि भूमि

### -पंकज चतुर्वेदी

हमारे देश में प्रतिवर्ष कोई दस हजार करोड़ रुपये के कृषि उत्पाद खेत या भंडारगृहों में कीटों के कारण नष्ट हो जाते हैं। इस बर्बादी से बचने के लिए कीटनाशकों का प्रयोग बढ़ा है। सन् 1950 में जहाँ इसकी खपत 2000 टन थी, वहीं आज कोई 90 हजार टन जहरीली दवाएँ देश के पर्यावरण में घुल मिल रही हैं। इसका लगभग एक तिहाई भाग विभिन्न सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों के अंतर्गत छिड़का जा रहा है। 1960-61 में केवल 6.4 लाख हेक्टेयर भूमि में कीटनाशकों का छिड़काव होता था जबकि 1988-89 में यह क्षेत्रफल 80 लाख हो गया। आज इसके डेढ़ हजार करोड़ हेक्टेयर होने की सम्भावना है। ये कीटनाशक जान-अनजाने, मिट्टी, हवा, जन-स्वास्थ्य और जैव विविधता को बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं। इसके अंधाधुंधा प्रयोग से पारिस्थितिकीय संतुलन बिगड़ रहा है और अनेक कीट व्याधियाँ फिर से सिर उठा रही हैं। कई कीटों की प्रतिरोधक क्षमता बढ़ गई है, उन पर दवाओं का कोई प्रभाव नहीं है। इसके विपरीत पर्यावरण के मित्र कीटों की कई प्रजातियाँ जड़मूल से नष्ट हो गई हैं। एक बात और कि प्रयोग की जा रही दवाइयों का केवल 10 से 15 प्रतिशत ही प्रभावकारी होता है। शेष जहर मिट्टी, भूगर्भ जल और नदी-नालों का अंग बन जाता है।

कर्नाटक के मलनाड क्षेत्र में सत्तर के दशक में लकवे से मिलता-जुलता रोग फैला जिसमें प्रारंभ में पिंडलियों और घुटनों में दर्द हुआ और फिर रोगी खड़े होने योग्य भी न रहा। 1975 में हैदराबाद के नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूट्रिशन ने चेता दिया था कि 'एंडमिक एमिलियन अर्थराइटिस ऑफ मलनाड' नामक इस रोग का कारण ऐसे धान के खेतों में पैदा

हुई मछली व केंकड़े खाना है जहाँ कीटनाशकों का प्रयोग हुआ हो। इसके बाद भी वहाँ धान के खेतों में पैराथिया और एल्ड्रिन का बहुतायत प्रयोग जारी है और यह रोग एक हजार से अधिक गाँवों में फैल चुका है।

दिल्ली, मथुरा, आगरा जैसे नगरों में यमुना के पानी में डीडीटी और बीएसजी की मात्रा जानलेवा स्तर पर पहुँच गई है। यहाँ उपलब्ध शाकाहारी और माँसाहारी दोनों प्रकार की खाद्य सामग्री में इन कीटनाशकों की खासी मात्रा पाई गई है।

टमाटर के कीड़ों को मारने के लिए बाज़ार में रोगर हाल्ट, सुपर किलर, रेपलीन और चैलेंजर नामक दवाएँ मिलती हैं। **इन पर अंकित है कि इनका प्रयोग एक फसल पर चार-पाँच बार से अधिक न हो लेकिन यह वैज्ञानिक चेतावनी बहुत महीन अक्षरों में अंग्रेज़ी में दर्ज है, जिसे पढ़ना-समझना आम किसान के वश में नहीं।** अतः किसान इसका छिड़काव 25 से 30 बार कर देता है। जिससे लोग गंभीर रोगों की चपेट में आ जाते हैं। इसकी पुष्टि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद भी कर चुकी है। गेहूँ को कीटों से बचाने के लिए मेलाथियान पाउडर मिलाया जाता है। इसका जहर गेहूँ को धोकर भी दूर नहीं किया जा सकता।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के फार्माकोलॉजी विभाग का एक अध्ययन बताता है कि **मच्छर, कॉकरोच मारने वाली दवाओं का कुप्रभाव सबसे अधिक 14 वर्ष के कम आयु के बच्चों पर पड़ता है।** ग्रीन पीस इंडिया की एक रिपोर्ट बताती है कि कीटनाशक बच्चों के दिमाग को घुन की तरह खोखला कर रहे हैं। संस्था ने बच्चों के मानसिक विकास पर कीटनाशकों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए देश के छह अलग-अलग राज्यों के जिलों में शोध किया है। जिसमें बताया गया है कि कीटनाशकों के अंधाधुंध और अवैज्ञानिक प्रयोग से भोजन और जल में रासायनिक जहर की मात्रा बढ़ रही है। इससे बच्चों का मानसिक विकास अपेक्षाकृत धीमा हुआ है।

ज्ञात रहे कि विदेशी परिस्थितिकीय के अनुकूल दवाइयों के भारतीय भूमि के अनुरूप जाँच के लिए कोई प्रावधान नहीं है। अनेक खतरनाक कीटनाशकों पर विकसित देशों ने अपने यहाँ तो पाबंदी लगा दी है। लेकिन व्यावसायिक हित साधने के लिए उन्हें भारत भेजना जारी रखा है। असुरक्षित कृषि रसायनों से पर्यावरण बचाने के लिए केन्द्र सरकार द्वारा 12 कीटनाशकों पर पूर्ण प्रतिबंध और 13 के प्रयोग पर कुछ पाबंदियाँ लगा दी गई हैं। सल्फास, डीडीटी और बीएचसी जैसे कीटनाशक सस्ते होने के कारण छोटे किसानों में बेहद लोकप्रिय हैं। यद्यपि इनकी बिक्री पर भी प्रतिबंध है लेकिन सरकारी विभागों के लिए खरीद के नाम पर इनके कारखानों के लाइसेंस धड़ल्ले से जारी होते हैं और इनमें बना माल दूसरे नामों से बेरोकटोक पीछे के दरवाजे से बाजार में भेज दिया जाता है। यह विडम्बना है कि हरित क्रांति का झंडा लहराने वालों ने हमारे खेतों व उत्पादों को विषैले रसायनों का गुलाम बना दिया है और आज इसके चौतरफा नुकसान हो रहे हैं। एक ओर खेती की लागत बढ़ रही है तो दूसरी ओर जमीन बंजर होती जा रही है और लोगों की सेहत पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है।

‘अखिल हिन्दू सभा वार्ता’ (साप्ताहिक) ( हिन्दू सभा भवन, मंदिर मार्ग नई दिल्ली) दि. 24 जून से 30 जून 2009 से साभार

## वीर सावरकर की प्रखर राष्ट्रभक्ति

-डॉ. कैलाश चन्द्र\*

वीर सावरकर भारत के राजनैतिक क्षितिज पर एक जाज्वल्यमान नक्षत्र की भाँति उदय हुए। 1200 वर्षों के मुस्लिम आक्रान्ताओं के अमानुषिक अत्याचारों से अस्त-व्यस्त, 150 वर्षों के चालाक अंग्रेजों के शासन में अपनी आत्मा को भूलती हुई हिन्दू जाति जब दिग्भ्रमित और उत्साहहीन हो रही थी, शत्रु से लोहा लेने की वैदिक युग से चली आ रही सहज वृत्ति को जैसे खो ही बैठी थी, भारत में अंग्रेजी राज की बरकतों की धुन अलापने वाले तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग में भेड़ों (काली भेड़ों) की वृद्धि हो रही थी, राष्ट्रवाद की जड़ें कमजोर हो रही थीं, विशुद्ध एवं प्रखर राष्ट्रवाद को समझते हुए भी भारत का हिन्दू नेतृत्व अंग्रेजों द्वारा बनाई गई 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' के खोखले राष्ट्रीय आन्दोलन में फँसा था, विदेशी विधर्मी मुट्ठी भर अंग्रेजों को मार बाहर कर, भारतमाता को स्वाधीन कर भारत जैसे अति महान, अति प्राचीन राष्ट्र को एक अजेय शक्ति-सम्पन्न राष्ट्र के रूप में खड़ा करने का विचार भी जब शायद ही कोई करता हो, ऐसे विकट अवसर पर शस्य-श्यामला वीर-प्रसविनी भारतमाता ने एक ऐसे लाल को जन्म दिया जिसने 15 वर्ष की अल्प आयु में ही, जब देशभक्त चाफेकर बंधुओं को फाँसी दी गई तो वीर सावरकर का खून खौल उठा और उन्होंने भारतमाता की स्वाधीनता के लिए प्राण-पण से संघर्ष करने का प्रण ले लिया। **19 वर्ष की आयु में ही नवयुवकों को मातृभूमि के लिए जीवन देने की प्रेरणा देने के लिए 'मित्र मेला' नामक संस्था चालू कर दी, जो आगे चलकर 'अभिनव भारत' के नाम की गुप्त संस्था बनी** और भारत के अनेक प्रान्तों में क्रांतिकारी वीरों को संगठित करने लगी। सावरकर जी की राष्ट्रभक्ति से ओत-प्रोत कविताएँ तथा लेख महाराष्ट्र के युवकों में राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए प्राणों की बाजी लगाने के भाव का संचार करने लगे।

अंग्रेजी शासकों के कान खड़े हुए। नवयुवक सावरकर की ओर वे संदेह और डर से देखने लगे। अवसर मिलते ही नवयुवक सावरकर अंग्रेजी साम्राज्य के गढ़ लंदन में जा विराजमान हुए, और 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संस्था का विस्तार इंग्लैण्ड ही नहीं, फ्रांस, जर्मनी, इटली और अमेरिका में बसे भारतीयों में किया जाने लगा। बड़े-बड़े मेधावी और साहसी युवक वीर सावरकर के अनुयायी बन कर क्रांति के मार्ग पर चलने लगे। लाला हरदयाल जी जैसे प्रखरबुद्धि, वी.सी. अय्यर जैसे विचारक, मैडम कामा जैसी वीरांगनाएँ और मदन लाल ढींगरा जैसे राष्ट्र की बलिवेदी पर न्यौछावर होने के लिए आतुर ऐसे सैकड़ों देशभक्त सावरकर के नेतृत्व में 'अभिनव भारत' के काम में लग गए। 1857 का 'स्वातंत्र्य समर' नामक प्रखर देशभक्ति की ज्वाला फैला देने वाली पुस्तक लिखकर तो सावरकर ने एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिखाया। अंग्रेज सरकार घबराई। पुस्तक छपने से पहले ही जब्त कर ली गई और प्रबंध किए गए कि पुस्तक बाहर न आ सके। किन्तु सावरकर के अनुयायी पुस्तक की पाण्डुलिपि को भारत और फ्रांस भेजने में सफल हो गए। भारत में उस पुस्तक की पाण्डुलिपि को सर सिकन्दर हयात खान (जो आगे चलकर पंजाब के प्रधानमंत्री पद पर रहे) लाए और प्रमुख क्रांतिकारी सरदार भगतसिंह ने उसे गुप्त रूप से छपवा कर बाँटने का प्रयास किया। अमेरिका में गदर आन्दोलन के जनक लाला हरदयाल ने भी पुनः छपवा कर यूरोप भर में भेजी, और कितनी ही भाषाओं में भी उसके अनुवाद किए गए।

आगे चलकर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के जवानों में भारत की आजादी के लिए प्राणों को न्यौछावर कर देने की भावना को जगाने के लिए वीर सावरकर जी की इसी पुस्तक के अंशों को छाप-छाप कर प्रचार करना चालू किया। उन्होंने '1857 के 'स्वातंत्र्य समर' नामक इसी पुस्तक को तमिल भाषा में अनुवाद करवा कर तमिलभाषियों में तेजस्वी राष्ट्रभक्ति का मंत्र फूँका।

लंदन में वीर सावरकर से प्रेरित होकर मदनलाल ढींगरा ने सर कर्जन वायली को गोली से भून डाला और भारत की मुक्ति के लिए अपने प्राणों की भी बलि दे देने की प्यास बुझाने के लिए अपने को अंग्रेज पुलिस को अर्पण कर दिया, किन्तु मदनलाल ढींगरा ने अपना वक्तव्य, जो वीर सावरकर जी द्वारा लिखा गया था, प्रसारित करने का प्रयत्न किया किन्तु धूर्त अंग्रेजी सरकार ने उसे छीन कर दबा डाला। यह सब होते हुए भी वीर सावरकर की योजना से वह वक्तव्य समाचारपत्रों तक पहुँच ही गया।

मदनलाल ढींगरा का वह वक्तव्य क्या था - एक विस्फोट था, हिन्दू युवकों को इस लड़ाई में कूदने का आह्वान था। राष्ट्र के नाम एक प्रेरक संदेश था। यह वक्तव्य हिन्दू राष्ट्रीयता का दर्शन था। भारत की राष्ट्रीयता का दर्शन था। भारत की राष्ट्रीयता हिन्दुत्व ही है, और हिन्दुत्व ही भारत की राष्ट्रीयता है, हिन्दुओं के लिए राष्ट्रभक्ति ही धर्म है, यह सब कुछ

**इस छोटे से वक्तव्य में लिख दिया गया** -ताकि जर्मनी, फ्रांस, इटली, हालैण्ड आदि देशों का समर्थन अभिनव भारत के इस सशस्त्र अभियान को प्राप्त हो सके। इन सभी उद्देश्यों में वीर सावरकर को सफलता भी मिली। जिसका वर्णन इस छोटे से लेख में करना कठिन होगा।

वीर सावरकर अंग्रेजों की आँख की किरकिरी बन गए। गुप्तचर सावरकर का पीछा करने लगे। अंग्रेजी साम्राज्य सावरकर में अपना सशक्ततम शत्रु देखने लगा। भारत में सावरकर के अनुयायी पकड़े जाने लगे। **श्री कन्हरे फाँसी पर चढ़ा दिए गए। सावरकर जी के बड़े भाई बाबाराव सावरकर को बंदी बनाकर काले पानी भेज दिया गया। छोटे भाई नारायण भी आगे चल कर जेल में दूँस दिए गए।** स्वयं सावरकर, अपने सहयोगियों को इस भयंकर कष्ट की स्थिति में देख इतने भावुक हो गए कि उन्होंने स्वयं बचकर काम करने की रणनीति को छोड़कर सामने आने का निश्चय कर लिया। वे स्वयं भी अंग्रेजों की कैद में आ गए।

इंग्लैण्ड से भारत लाए जा रहे बन्दी वीर सावरकर का जलपोत से कूद कर फ्रांस के तट पर पहुँचना विश्व भर में शौर्य का एक उदाहरण बन गया। अण्डमान की जेल में बैल की नाई कोल्हू चलाने, जेल की कालकोठरी में बंदी सावरकर ने गोवा में ईसाई पुर्तगाली शासन के पैशाचिक अत्याचारों की दर्दभरी कहानी को लेकर मराठी में उत्कृष्ट महाकाव्य 'गोमान्तक' लिखा जो पीछे से हिन्दी सहित कई भाषाओं में अनुवाद किया गया।

सावरकरजी का एकमात्र लक्ष्य था पराधीन भारत को स्वतंत्र करा कर विश्व का महानतम राष्ट्र बनाना। सन् 1920-21 में चले मुसलमानों के खिलाफत आन्दोलन के समय मालाबार के हिन्दुओं पर किए गए अमानुषिक अत्याचारों से आहत और विह्वल होकर सावरकरजी ने जेल में ही 'मोपला' नामक उपन्यास लिखा। **खिलाफत आंदोलन को गांधीजी का पूर्ण सहयोग मिलने से मुस्लिम समाज में ऐसा जनून भर गया कि उन्होंने भारत भर के अनेक नगरों में हिन्दुओं पर आक्रमण चालू कर दिए।** वह भारत के इतिहास का एक काला अध्याय था, जब हिन्दू नेता मुसलमानों का जितना अनुनय-विनय करते उतनी ही उनकी उग्रता में वृद्धि हो रही थी। ऐसी स्थिति में भारत के विशुद्ध राष्ट्रवाद की व्याख्या के लिए 'हिन्दुत्व' नामक ग्रंथ लिख कर हिन्दु राष्ट्रवाद को सशक्त आधार दिया। उन्होंने कहा हिन्दुत्व ही इस राष्ट्र का आधार है। यदि आधार ही अशुद्ध होगा, तो राष्ट्र-मंदिर भी अशुद्ध, विकृत और दुर्बल होगा। हिन्दू हिन्दुत्व पर आधारित राजनीति को ही अपनाएँ और हिन्दू-मुस्लिम एकता के मोह में फँस कर अपने विशुद्ध राष्ट्रवाद से दूर न हो जाएँ। **उन्होंने राष्ट्र को जो मंत्र दिया वह था - "राजनीति का हिन्दुकरण और हिन्दुओं का सैनिकीकरण"।** "धर्मान्तरण तो राष्ट्रान्तरण है" (जहाँ-जहाँ अधिक संख्या में हिन्दू धर्मान्तरित हो गए वहाँ भारत, भारत न रहकर पाकिस्तान बन गया)। यह सच्चाई अन्य सभी हिन्दूवादी नेता अनुभव करते हुए भी बोलने का साहस नहीं जुटा पाते थे। हिन्दुत्व के आधार पर हिन्दूमात्र का सैनिकीकरण यदि कर लिया जाए तो हम देखेंगे कि यह पिछड़ा, कमजोर समझा जाने वाला राष्ट्र विश्व की सर्वोच्च शक्ति बन जाए जैसे छोटा-सा इस्त्राइल जनसंख्या में अपने से सौ गुने मुस्लिम देशों के समूह को नाकों चले चबवाता रहा। हिन्दू समाज ने वीर सावरकर के राष्ट्रोत्थान के इस मंत्र की अवहेलना कर दी, किन्तु छोटे से देश इस्त्राइल ने सावरकर के इस मंत्र को पूरी तरह ग्रहण कर लिया। स्वतंत्र होते ही 6 लाख यहूदियों की जनसंख्या वाला इस्त्राइल केवल अपने यहूदी धर्म के आधार पर अपने राष्ट्र को फिर से खड़ा करने लगा। इस्त्राइल ने स्वतंत्र होते ही घोषणा की थी कि इस्त्राइल संसार भर के यहूदियों का देश है और प्रत्येक युवक-युवती को सैनिक प्रशिक्षण देकर सारे राष्ट्र को अपने से कई गुना बड़े शत्रु के आक्रमणों का मुकाबला करने के लिए उद्यत कर दिया। बस, फिर क्या था-सावरकरजी मंत्र काम कर गया। चकित विश्व ने देखा-नन्हें से नवीन राष्ट्र इस्त्राइल ने अरब देशों को युद्ध में परास्त कर डाला। छोटे से इस्त्राइल ने सावरकरजी मंत्र को सिद्ध किया।

यह भारत का दुर्भाग्य ही है कि भारत ने अपने सर्वश्रेष्ठ नेता को भुला डाला। स्वतंत्रता मिलते ही नेहरूवादियों ने सावरकर-विचार को मिटा डालने के भरपूर प्रयास किए। भारत की दुर्दशा बढ़ती चली गई। नागालैण्ड, मिज़ोरम जैसे भारत विरोधी ईसाई राज्यों का उदय हुआ। पाकिस्तान बनाने के अपराध-बोध से दबे हुए कई मुस्लिम संगठनों में अब पुनः कट्टरता अलगाववाद और भारत विरोधी उग्रवाद बढ़ने लगा। पाकिस्तानी षड्यंत्र बढ़ने लगे। हिन्दुओं को विभाजित किया जाने लगा। सीमाओं पर शत्रु दलों की घुसपैठ इतनी बढ़ गई कि सीमाएं असुरक्षित हो गईं। देशभक्तों के अधिकार सीमित कर दिए गए। संदेहास्पद आस्था वाले लोग शासन के ऊँचे पदों पर आसीन होने लगे, और पता नहीं अभी और क्या-क्या हो, यदि अभी भी हिन्दू समाज सावरकर-विचारधारा को नहीं अपनाता। एकमात्र 'सावरकर विचारधारा' ही देश को, अब इन संकटों से बचा सकती है, इस विपन्न और प्रियमाण जाति का उद्धार कर सकती है। उस महान तेजपुंज राष्ट्रनायक वीर सावरकरजी को कृतज्ञ राष्ट्र का शत-शत नमन।

333, सुनहरी बाग अपार्टमेंट, सेक्टर-13, रोहिणी, नई दिल्ली

## महान् समाजसेवी श्री ओंकार जी भावे का निधन

विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री ओंकार जी भावे का दिनांक 23 जुलाई 2009 को दिन में 11.15 बजे देहावसान हो गया। वे 85 वर्ष के थे।

शवास लेने में कठिनाई होने के कारण उन्हें 27 जून 2009 को सायं काल 5.00 बजे राममनोहर लोहिया अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जाँच में पता लगा कि उनके दाहिनी फेफड़े में 70 प्रतिशत जकड़न है। उपचार प्रारंभ हुआ परन्तु चार दिन पश्चात बाएँ फेफड़े में भी जकड़न हो गई। परिणामस्वरूप उन्हें तत्काल आई.सी.यू. में वेंटिलेटर पर रखा गया था। सभी प्रकार की जाँच हुई, रोग का मूल कारण पकड़ में न आ पाया।

श्री ओंकार जी भावे का जन्म श्रावण कृष्ण पक्ष दशमी (मराठी पंचांगानुसार आषाढ कृष्ण पक्ष दशमी) तदनुसार 26 जुलाई 1924 को आजमगढ़ में हुआ। श्रीमती लक्ष्मीबाई भावे तथा श्री नरसिंहराव भावे के पुत्र ओंकार भावे 1938 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बने। 1940, 1941 व 1942 ई. में क्रमशः संघ शिक्षा वर्ग प्रथम वर्ष, द्वितीय तथा तृतीय वर्ष तीनों नागपुर से किए। सन् 1945 में सर्वप्रथम प्रयाग से बी.ए. करने के उपरांत श्री भावे संघ के जीवनव्रती प्रचारक बने।

सन् 1982 में वे विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्गत संस्कृति रक्षा योजना के उत्तर प्रदेश के प्रमुख बने। उत्तर प्रदेश में विश्व हिन्दू परिषद के कार्य का मार्गदर्शन किया। 1983 में प्रथम एकात्मता यज्ञ का आयोजन हुआ तब हरिद्वार से कन्याकुमारी तक जाने वाले मुख्य यात्रा के वे हरिद्वार से नागपुर तक यात्रा प्रमुख थे। अप्रैल 1984 में श्रीराम जन्मभूमि आन्दोलन प्रारंभ होने पर वे श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति एवं धर्मस्थान मुक्ति यज्ञ समिति के वरिष्ठ मंत्री बने। श्रीराम जन्मभूमि का ताला खुलने के पश्चात् जब राम जानकी रथों को सरकार ने अपने अधिकार में ले लिया तब उन रथों की मुक्ति के लिए किए जाने वाले आन्दोलन का उन्होंने नेतृत्व किया। 1984 से लेकर अंतिम समय तक वे श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलन से सक्रियता के साथ जुड़े रहे। सन् 1984 में उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश (अद्यावधि छत्तीसगढ़ व उत्तराखण्ड सहित) संपूर्ण क्षेत्र के विश्व हिन्दू परिषद के संगठन प्रमुख बने। 2 नवम्बर 1990 में अयोध्या में हुई कारसेवा के लिए एक जत्थे का नेतृत्व श्री भावे ने किया था। सन् 1991 में लखनऊ से उनका केन्द्र दिल्ली बना। वे परिषद के केन्द्रीय मंत्री बने, 1995 में संयुक्त महामंत्री तथा 2009 में विश्व हिन्दू परिषद के उपाध्यक्ष बने।

सांस्कृतिक गौरव संस्थान परिवार उनके निधन से शोकाकुल है। हम उनके निधन से हुई क्षतिपूर्ति के लिए भगवान् श्रीराम से प्रार्थना करते हैं।

## गोस्वामी तुलसीदास जी की रामराज्य की अवधारणा

-डॉ. रामशरण गौड़

..... (पिछले अंक से आगे का शेष भाग)

तुलसीदास जी की आकांक्षा भारत में एक 'सुशासन' और 'सुराज देखने की थी अतः उन्होंने इनकी ओर संकेत करते हुए राम के राज्य को इस रूप में बताया है।

**दैहिक दैविक भौतिक तापा।**

**राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।**

**सब नर करहिं परस्पर प्रीति।**

**चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति।**

**नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।**

**नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना।**

**सब निर्दभ धर्मरत पुनी।**

**नर अरु नारि चतुर सब गुनी।**

राम के राज्य में सभी जगह प्रेम का साम्राज्य था, सब उदार थे पर उपकारी थे। तुलसी को नारी निर्दक कहकर उनकी आलोचना की जाती है। लोग भूल जाते हैं कि संपूर्ण भारतीय समाज को एक नारीव्रत का संदेश तुलसी ने ऐसे समय में दिया जब नारी को केवल भोग्या ही समझा जाता था। तुलसी के समय में मुगल ही क्या हिन्दू शासकों और राजाओं के महलों में नारियों की संख्या हज़ारों तक पहुँच गई थी, जिसे ये अज्ञानी शासक अपने वैभव का प्रतीक मानते थे। अतः तुलसी ने एक नारीव्रत के आदर्श को रामराज्य के माध्यम से प्रस्तुत किया -

**सब उदार सब पर उपकारी। विप्र चरन सेवक नर नारी।**

**एक नारीव्रत रत सब झारी। ते मन बच क्रम पति हितकारी।**

'यथा राजा तथा प्रजा' की प्रवृत्ति के अनुसार प्रजा में आदर्श और सद्गुणों की अपेक्षा तभी की जा सकती है जब राजा स्वयं भी सदाचारी हो तथा दंभहीन, शील नम्रता (विनय) आदि गुणों से विभूषित हो। तुलसी इस ओर अधिक सचेत रहे हैं। तुलसी के राम उक्त सभी गुणों के आगार हैं। गर्व उन्हें छू तक नहीं गया। उन्होंने विभीषण और निषाद का जो सम्मान किया वह मानव-समाज के लिए अनुकरणीय है -

**पुनि कृपालु लियो बोलि निषादा।**

**दीन्हे भूषन बसन प्रसादा।**

**जाहु भवन मम सुमिरन करेउ।**

**मन क्रम बचन धर्म अनुसरेहु।**

**तुम मम सखा भरत सम भ्राता।**

**सदा रहेहु पुर आवत जाता।**

(रामचरितमानस-7/20)

शास्त्रों में हीन, मलीन, कुरूप, निर्दित आदि व्यक्तियों से बिना किसी दूषित भाव के मेल-मिलाप और सद्व्यवहार को 'शील' कहा गया है -

**'हीनै' दीनैर्मलीनैश्च बीभैत्से कुत्सितैरपि।**

**महतोच्छिदसंश्लेषं सौशील्यं विदुरीश्वराः।**

(भगवद्गण दर्पण)

राम शील के भंडार हैं। वे केवट, निषादराज, शबरी आदि से ही प्रेम नहीं करते, बल्कि जटायु, शिवरी, रीछ-भालुओं से उनका प्रेम उल्लेखनीय है -

जद्यपि द्रोह किया सुरपति-सुत, कहि न जात अति भारी।  
सकल लोक अवलोकि सोकहत, सरन गये भय टारी।  
बिहंग जोनि आमिष अहार पर, गीध कौन ब्रतधारी।  
जनक-समान क्रिया ताकी निज, कर सब भांति सँवारी।  
अधम जाति-सबरी जोषित जड़, लोक-बेद तें न्यारी।  
जानि प्रीति, दै दरस कृपानिधि, सोउ रघुनाथ उधारी।  
(विनयपत्रिका-पदसंख्या-166)

तुलसी की दृष्टि में नीतिविहीन राजा सदा सोचनीय होता है। भरत को उपदेश देते हुए महर्षि वसिष्ठ भरत जी से कहते हैं -

सोचिअ नृपति जो नीति न जाना।

जेहि न प्रजा प्रिय प्रान समाना।

(रामचरितमानस-2/172)

मत्सर (ईर्ष्या) मान, मोह और मद मनुष्य के ऐसे अवगुण हैं जो समाज की समस्त समता और समरसता का विघटन करते हैं। इन अवगुणों का हास तभी हो सकता है जब किसी नीतिवान और प्रतापी राजा (मुखिया) के हाथ में राज्य की बागडोर हो। जब राम के प्रचंड प्रताप के सूर्य का उदय हुआ तो उक्त अवगुणों का लोप हो गया और धर्म रूपी सरोवर में ज्ञान और विज्ञान रूपी कमल विकसित हो गए और सुख, संतोष, वैराग्य और विवेक रूपी चकवे शोकहीन हो गए -

मत्सर मान मोह मद चोरा ।

इन्ह कर हुनर न कवनिहूँ ओरा।

धरम तड़ाग ग्यान बिग्याना ।

ए पंकज बिकसे बिधि नाना।

सुख संतोष बिराग बिबेका ।

बिगत सोक ए कोक अनेका।

यह प्रताप रबि जाकें उर जब करइ प्रकास।

पछिले बाढहिं प्रथम जे कहे ते पावहिं नास।

(रामचरितमानस-7/31)

तुलसी राजा (मुखिया) के गुणों का वर्णन करते हुए उसके माली, किसान, सूर्य और मुख के समान होने की कामना करते हैं। माली मुरझाए हुए पौधों को सींचता है, अधिक बढ़े हुए पौधों को काटता-छाँटता है, झुके हुए पौधों को लकड़ी का सहारा देकर खड़ा करता है। सूर्य किसी को प्रत्यक्ष रूप से कष्ट न देकर समुद्र और नदी से पानी लेकर पुनः अमृत रूपी जल की वर्षा करता है। समुद्र और नदी से जल-ग्रहण की उसकी प्रक्रिया को कोई देख नहीं पाता। किसान खेत तैयार करता है, खाद देता है, बीज बोता है, सींचता है, रक्षा करता है फिर फसल पकने से काटता है। इसी प्रकार राज्य को माली के समान प्रजा की समृद्धि और संपन्नता का ध्यान रखना चाहिए, ताकि कर देते समय उसे किसी प्रकार का कष्ट न हो और उसे अपना जीवन विपन्नता में न बिताना पड़े। राजा को माली के समान दीन-निर्धनों की सुरक्षा और उच्छृंखल-दुराचारियों को नियंत्रित करना चाहिए -

माली भानु किसान सम नीति निपुन नरपाल ।

प्रजा भाग बस होहिंगे कबहुँ कबहुँ कलिकाल।

(दोहावली-507)

बरसत हरषत लोग सब करषत लखै न कोइ।  
तुलसी प्रजा सुभाग ते भूप भानु सो होइ।

(दोहावली - 508)

तुलसीदासजी राजा (मुखिया) के गुणों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि मुखिया को मुख के समान होना चाहिए। मुख खाने-पीने के लिए एक है, परंतु उसके खाने से मनुष्य के सभी अंगों का पोषण होता है। इसी प्रकार राजा को विवेक के साथ सभी शासन के अंगों का पालन करना चाहिए। न कि कर के रूप में एकत्रित धन को वह अपने ऐशो-आराम और विलासिता पर ही उड़ा दे। वह इतना स्वार्थी, लोभी और लालची न हो जाए कि उसे जनता के हित का ध्यान ही न रहे -

मुखिया मुखु सो चाहिए खान पान कहूँ एक।  
पालइ पोषइ सकल अंग तुलसी सहित विवेक।

(दोहावली-522)

‘संतोष’ समाज का ऐसा गुण है जो समाज के विकास में सहयोग प्रदान करता है, क्योंकि काम व्यक्ति के सभी अवगुणों का आधार है। संतोष से काम का प्रभाव कम होता है और व्यक्ति को सुख-शांति प्राप्त होती है -

बिनु संतोष न काम नसाहीं।

काम अछत सुख सपनेहूँ नाहीं।

(रामचरितमानस-7/89)

तुलसीदास जी के वर्णित रामराज्य में सर्वत्र संतोष का साम्राज्य है, अतः सभी व्यक्तियों को इच्छानुसार भोग-विलास प्राप्त है। खेती, मजदूरी, विद्या, व्यापार, सेवा और कारीगरी तथा अन्य कार्यों से सबको अपेक्षित फल मिलते हैं, उनका परिश्रम निरर्थक नहीं जाता -

राम राज संतोष सुख घर बन सकल सुपास।  
तरु सुरतरु सुरधेनु महि अभिमत भोग बिलास।  
खेती बनि बिद्या बनिज सेवा सिलिप सुकाज।  
तुलसी सुरतरु सरिस सब सुफल राम केँ काज।

(दोहावली-184)

राम के राज्य में आपसी सद्भाव और प्रेम इतना है कि किसी के क्रोध करने पर कोई उसकी चिंता नहीं करता क्योंकि समाज में अपकार की प्रवृत्ति नहीं है -

कोवें सोच न पोच कर करिअ निहोर न काज।  
तुलसी परमिति प्रीति की रीति राम केँ काज।

(दोहावली- 186)

प्रजा में सदाचरण की प्रवृत्ति का विकास राजा के आदर्श से ही संभव हो सकता है। इस आदर्श की स्थापना और समाज में समस्वरता और समरसता के भाव की जागृति की संभावना तभी हो सकती है जब राजा की राज-व्यवस्था में अधिकारियों और सहयोगियों में समस्वरता और एकरसता हो। तुलसी के रामराज्य में इस समरसता और समस्वरता के मूल्य की प्रतिष्ठा आदि से अंत तक परिलक्षित होती है। राम के भाइयों के आचरण में सर्वत्र अनुकूलता दिखाई पड़ती है -

सेवहिं सानुकूल सब भाई ।

रामचरन रति अति अधिकाई।

प्रभु मुख कमल बिलोकत रहहीं।

कबहुँ कृपाल हमहिं कछु कहहीं।

राम करहिं भ्रातन्ह पर प्रीती।

नाना भाति सिखावाहिं नीती।

हरषति रहहिं नगर के लोगा।

**करहिं सकल सुर दुर्लभ भोगा।**

**(रामचरितमानस-7/25)**

राज-दरबारों में अपनी पहुँच बना लेने वाले व्यक्तियों के कार्यों का निष्पादन तो सभी करते हैं, परंतु जो दीन और पराधीनों की सुनकर उनकी समस्याओं का समाधान करता है वह राजा, राज्य-व्यवस्था और समस्त राज्य-परिवार यश का भागीदार होता है। 'विनयपत्रिका' के अंत में तुलसीदास जी ने जहाँ इस तथ्य का वर्णन किया है वहीं राज्य-परिवार की समरसता और सामंजस्य का भी परिचय दिया है -

**पावन-सुवन! रिपु-दवन ! भरतलाल! लखन ! दीन की।**

**निज निज अवसर सुधि किये, बलि जाउँ,**

**दास-आस पूजि है खासखीन की।**

**राज-द्वार भली सब कहैं साधु-समीचीन की।**

**सुकृत-सुजस, साहिब-कृपा।**

**स्वारथ-परमारथ, गति भये गति-बिहीन की।**

**(पद संख्या 278)**

**मारुति-मन, रुचि भरत की लखि लषन कही है।**

**कलिकालहु नाथ !**

**नाम सों परनतीति-प्रीति एक किंकर निबरी है।**

**सकल सभा सुनि लै उठी, जानी रीति रही है।**

**कृपा गरीब निवाजी की, देखत गरीब को साहब बाँह गई है।**

**(पद संख्या 279)**

डॉ. रमानाथ त्रिपाठी ने राम के चार गुणों का वर्णन करते हुए कहा है कि राम का प्रथम गुण है कि वे अपनी मातृभूमि और 'राष्ट्र' को प्रेम करते हैं, उसकी सुरक्षा के लिए वन को चले जाते हैं। दूसरा गुण यह है कि वे पूरा जीवन सदाचार और नैतिकता में व्यतीत करते हैं। उनका तीसरा गुण यह है कि वे दीन-हीन, दुखी-पीड़ितों से प्रेम करते हैं। शबरी, निषाद, भील-कोल सभी को हृदय से अपनाते हैं। चतुर्थ गुण यह है कि वे आततायी, अन्यायियों-खर, दूषण, सुबाहु, ताड़का और रावण का वध करके अपने पराक्रम का परिचय देते हैं। आज राष्ट्र को ऐसे ही मुखिया की आवश्यकता है।

वर्तमान समय में जहाँ स्वार्थ, दंभ, मर्यादाहीनता, भ्रष्ट-आचरण में सभी नेता लिप्त हैं, दीन-हीन जनता के दुख-दर्द को समझने-जानने की दूरदर्शिता न हो किसी नियम का आचरण न हो, हर प्रकार से सत्ता को हथियाने का कुत्सित उद्देश्य हो, जहाँ लोकतंत्र मध्यकालीन राजसत्ता का परिचय देने लगा हो, जनता के करों से प्राप्त धन को नेता और नौकरशाही अपने ऐशो-आराम और विलासिता में उड़ा रही हो। ऐसे समय में आज तुलसीदास जी का रामराज्य ही भारत के सभी कष्टों का समाधान है।

दलगत राजनीति की दुरभिसंधियों ने शासन की सभी मर्यादाओं को खंडित कर दिया हो। अपने पक्ष में मत प्राप्त करने के लिए राष्ट्र-हित को ताक पर रख दिया हो, ऐसे समय में तुलसी और उनका रामराज्य सर्वथा प्रासंगिक दिखाई पड़ता है। तुलसी के रामराज्य के मूल्यों और राजा राम के गुणों से विभूषित राजा (मुखिया) इस देश को नई दिशा दे सकता है, अन्यथा राष्ट्र की निरीह जनता स्वार्थी और भ्रष्ट नेताओं और नौकरशाही के कुकृत्यों से पीड़ित होकर कराहती ही रहेगी।

## दिन के उजाले में मौत भी सहम जाती है

**डॉ. क.क.अग्रवाल**

अक्सर लोगों को कहते सुना जाता है - **समय होत बलवान।** खासकर उन परिस्थितियों में जब लोग इस वाक्य को दुहराने के लिए खुद को मजबूर पाते हैं, जब उन्हें तेज़ी से कोई बदलाव महसूस होता है। चिकित्सा विज्ञान ने भी समय के महत्व की पुष्टि की है। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान मानता है कि इमरजेन्सी की स्थिति में दिन के मुकाबले रात में मृत्यु की आशंका बढ़ जाती है। वहीं धार्मिक ग्रंथों में भी इसके दूसरे पहलू का सत्यापन मिलता है। उत्तरायण यानी मकर संक्रांति से छह महीने तक शुक्ल पक्ष और दिन का समय मृत्यु के लिए उत्तम माना जाता है।

भगवद् गीता (अध्याय 8 श्लोक संख्या 24), बृहदारण्यक उपनिषद् (6.2.15) और छांदोग्योपनिषद् (5.10.2) में उल्लिखित है कि उत्तरायण, शुक्ल पक्ष और दिन के समय मृत्यु हो तो प्राणी को मोक्ष की प्राप्ति होती है। वहीं, भगवद्गीता के आठवें अध्याय के श्लोक संख्या 25 और बृहदारण्यक उपनिषद् (6.2.16) में उल्लिखित है कि अगर मृत्यु दक्षिणायण, कृष्ण पक्ष और रात के समय हो तो वह अमंगलकारी होती है। जबकि आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के विश्लेषण का आधार हॉस्पिटल और मरीजों की परिस्थितियों पर निर्भर है।

अध्ययनों से पता चला है कि रात में छुट्टी के दिनों और सप्ताह के अंतिम दिन हार्ट अटैक आने पर मरीजों के बचने की संभावना अस्पतालों में वर्किंग-डे (कार्य दिवस) की तुलना में कम रहती है। आपात्कालीन (इमरजेन्सी) और अन्य बीमारियों के साथ भी यही हाल है। इन बातों पर अगर गौर करें तो सारी परिस्थितियां अपने आप स्पष्ट हो जाएंगी। सप्ताह के अंतिम दिनों में, छुट्टी के दिनों में और रात के समय हॉस्पिटलों में डॉक्टर और स्टाफ या तो पूरी तरह तैयार नहीं रहते हैं या मौजूद नहीं रहते हैं।

विभिन्न ऋतुओं के अध्ययन के बाद निष्कर्ष निकाला गया कि ग्रीष्म ऋतु के मुकाबले शीत ऋतु में हार्ट अटैक, आकस्मिक मृत्यु और हार्ट फेल (हृदय-आघात) होने की घटनाएं अधिक होती हैं। फ्रांस में भी किए गए एक अध्ययन से पता चला है कि शीत ऋतु खासकर दिसंबर और जनवरी में हार्ट फेल से अधिक मृत्यु होती है। महीनों के आधार पर इसका विश्लेषण करने पर पता चलता है कि अगस्त की तुलना में जनवरी में 35 प्रतिशत अधिक मृत्यु होती है।

चौबीस घंटे की गणना से प्राप्त आँकड़ों के आधार पर निष्कर्ष निकाला गया है कि सुबह के समय हार्ट अटैक और अकस्मात मृत्यु सबसे अधिक होती है। हार्ट अटैक से मृत्यु पौ फटने के समय होती है। साथ ही पूर्णिमा और उसके आसपास के समय में ब्लड प्रेशर चढ़ने का डर बना रहता है।

अमेरिका के अस्पतालों में प्रत्येक वर्ष 98 हजार मरीजों को बचाया जाता है, लेकिन इससे अधिक संख्या रात में मरने वालों की होती है।

‘नवभारत टाइम्स वेबसाइट’ दि. 30 अप्रैल 2009 से साभार

## गज़ल

ओम रायजादा, कटनी (म.प्र.)

दूसरों के दुख में मजे पा रहे हैं लोग।  
आदमी का खून पिये जा रहे हैं लोग।  
हम लाएंगे सहर यहाँ हम लाएंगे सुबह।  
मज़हब का नाम लेके लड़े जा रहे हैं लोग।  
बस्ती गरीबों की वह उजाड़ी है इसलिए।  
अपने खुदा का घर वहाँ बनवा रहे हैं लोग।  
भूख प्यास साथ ले नंगे बदन गया।  
चन्दा उसी के नाम यहाँ खा रहे हैं लोग।।  
जिसको बनाके आदमी के हाथ कट गये।  
आज उसी ताज के गुण गा रहे हैं लोग।।  
श्रम के पसीने से ही बुझती जमीं की प्यास।  
मेहनत से 'ओम' लेकिन कतरा रहे हैं लोग।।

'मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद्' पत्रिका, बंगलूर, जुलाई 2009 से साभार

## पंथनिरपेक्षता का अर्थ आतंकवाद को चुपचाप सहना नहीं है

-तवलीन सिंह (वरिष्ठ स्तंभकार)

आइए, एक छोटे से क्विज़ से शुरुआत करें। आप ऐसे संगठन को क्या कहेंगे जो ओसामा-बिन-लादेन को एक नायक एवं नेहरू व गाँधी को खलनायक समझता है ? आप ऐसे संगठन को क्या कहेंगे जिसका नेता कता है कि वह भारतीय होने में काफी शर्म महसूस करता है? आप उस संगठन को क्या कहेंगे जो खुलेआम कहता है कि वह भारत के खिलाफ जेहाद चला रहा है क्योंकि, “मुस्लिमों की आवाज़ दबाई जा रही है।” क्या आप इसे सांप्रदायिक, खतरनाक एवं विनाशक कहने की हिम्मत करेंगे? इसका एकमात्र संक्षिप्त जवाब है - नहीं। क्योंकि हम पंथनिरपेक्षता में इतने अधिक तल्लीन हैं कि हम ऐसी कोई भी बात करने में हिचकिचाते हैं जिससे मुसलमानों को ठेस पहुँच सकती है। परिणामस्वरूप 'स्टूडेंट्स इस्लामिक मूवमेंट आफ इंडिया' (सिमी) के रूप में जाना जाने वाला हमारा अपना तालिबान का रूप 10 लाख सदस्यों की संख्या वाला आन्दोलनकारी रूप धारण कर चुका है। परिणाम यह भी है कि यह सांप्रदायिक भावना एवं हिंसा फैलाने एवं गर्वपूर्वक ऐसा करते रहने की घोषणा करने को स्वतंत्र है। 'सिमी' के महासचिव सफदर नागौरी के शब्दों में 'जब मुसलमानों की आवाज़ दबाई जाती है, जब हमारे ऊपर कानपुर की तरह गोलियां बरसाई जाती हैं, हम मारे जाते हैं, जब संघ परिवार द्वारा यह बयान दिया जाता है कि अयोध्या में मार्च 2002 तक मंदिर निर्माण कार्य शुरू हो जाएगा, तब मैं कह सकता हूँ कि मुसलमान दबे रहेंगे और मैं परिणाम के बारे में ज्यादा आश्वस्त नहीं हूँ।”

नागौरी ने अपने ये विचार इंडिया टुडे को दिए गए एक साक्षात्कार में व्यक्त किए और इसी साक्षात्कार में उन्होंने कहा कि 'सिमी' ओसामा-बिन लादेन की एक नहीं बल्कि दर्जनों बार स्तुति करेगा क्योंकि उन्होंने अमरीका के सामने अपना कद ऊँचा किया है जो विश्व में सबसे बड़े आतंकवादी हैं। छिः ! .... अगर आपने तहलका डॉट कॉम के चक्कर में कानपुर के दंगों की कहानी नहीं सुनी तो आपकी जानकारी के लिए यह बताना जरूरी है कि 'सिमी' ही हाल में कानपुर में हुए सांप्रदायिक दंगों के लिए सीधे जिम्मेदार था। यह 16 मार्च को शुरू हुआ, जब एसआईएमआई (सिमी) के सक्रिय कार्यकर्ताओं ने मुसलमानों से दिल्ली में कुरान जलाए जाने के खिलाफ विरोध करने की अपील की। 'सिमी' ने कानपुर में माहौल गर्म किया, जिसके

परिणामस्वरूप पुलिस पर कथित रूप से सोडा बॉटल की बोटलों से हमला किया गया और फिर जैसा होता है, पुलिस फायरिंग में कुछ व्यक्ति मारे गए।

अधिकतर समाचार-पत्रों ने हिंसा के बारे में ऐसी खबरें दीं मानो सारी गलती पुलिस की थी और इसमें 'सिमी' का नाम इसलिए उछाला गया कि इस तरह के संगठन हिन्दुओं के सीधे निशाने पर थे। ऐसा नहीं है कि इन समाचार-पत्रों ने इस्लामिक संगठनों का उल्लेख नहीं किया, जब वे बजरंग दल एवं विश्व हिन्दू परिषद पर हमला करते थे। भारतीय पत्रकारिता में एक निन्दनीय दोहरा मापदंड देखने को मिलता है जहाँ हम हिन्दुत्व को एक ऐसी ताकत के रूप में देखते हैं जो भारत को बर्बाद कर सकता है, लेकिन मुस्लिम समुदाय को निर्दोष के रूप में देखते हैं। **एक निष्पक्ष फ्रैंच पत्रकार फ्रांस्वा गोएतिए महाशय का मानना है कि भारतीय पत्रकार इस्लामिक संगठनों के साथ हिन्दुत्व की तुलना द्वारा भारत के हितों को नुकसान पहुँचा रहे हैं।**

बामियान में बुद्ध की मूर्तियां गिराने के बाद अगर आप पश्चिमी समाचार-पत्र पढ़ें तो आपको गोएतिए महाशय के विचारों से असहमत होने में कठिनाई होगी। अमेरिका एवं ब्रिटेन के समाचार-पत्रों में कई लेखों को पढ़ा, जिसमें बामियान की घटनाओं एवं बाबरी मस्जिद को ढहाने की तुलना की गई थी और यह बिना स्पष्ट किए कि बाबरी मस्जिद सरकार के आदेश से नहीं गिराई गई थी। दूसरी तरफ बुद्ध की मूर्तियां तालिबान के शीर्ष नेता मुल्ला उमर के विशेष आदेश से नष्ट की गई थीं। कई भारतीय समाचार-पत्रों ने अपने रिपोर्टर्स को अफगानिस्तान भेजने की ज़रूरत नहीं समझी, लेकिन जो वहाँ गए वहाँ से आम अफगानियों की उदासी की हृदय विदारक कहानियों के साथ वापिस आए लेकिन वे वास्तव में न ही यहाँ हैं और न ही वहाँ। **हमारी वास्तविक समस्या यह है कि इस्लाम का तालिबानी रूप हमारे अपने देश में भी बढ़ रहा है।** यह केवल 'सिमी' से ही नहीं झलकता है। अपनी यात्रा में मैं कई युवा मुसलमानों, खासकर पुरुषों से मिली जो भयभीत करने वाले कट्टरवादी स्वरों में बोल रहे थे। मुझे कुछ उदाहरण पेश करने की इजाज़त दी जाए। मैं कुछ माह पहले कश्मीर में पाटन शहर में लोगों से बात करने हेतु रुकी। मैंने उनसे पूछा कि क्या वह इस तथ्य से चिंतित हैं कि आज़ादी के लिए उनका संघर्ष अब इस्लाम के नाम पर एक 'आतंकवाद' का रूप ले चुका है। वह प्रयोजन का समर्थन करते हुए बोले - नहीं क्योंकि वे मुसलमान थे और उनके लिए इस्लाम सबसे बड़ी चीज़ थी, इसलिए उन्हें कतई बुरा नहीं लगता कि उनके मुजाहिद्दीन मुख्य रूप से विदेशी हैं। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में मैंने देश के विभिन्न भागों से आए छात्रों के एक बड़े समूह से बात की। विश्वविद्यालय में एक गुप्तचर अधिकारी को पीटे जाने और उसे एक हॉस्टल में बंद किए जाने की घटना के बारे में मुझे पता लगाना था। यह एक घृणित घटना थी लेकिन सभी ने इस आधार पर इसका समर्थन किया कि ए.एम.यू. में जासूसी नहीं की जानी चाहिए। जब मैंने इस बात का इशारा किया कि विश्वविद्यालय में हथियार पाए गए, 'सिमी' की पर्याप्त उपस्थिति है और हॉस्टल आतंकवादियों को शरण देने के लिए जाना जाता है तो उन्होंने हर बात से इंकार किया।

उन्होंने इसे झूठ बताते हुए कहा कि ए.एम.यू. को बदनाम करने के लिए झूठी खबरें फैलाई जा रही हैं, क्योंकि यह एक मुस्लिम विश्वविद्यालय है। एक अन्य अवसर पर कोयम्बटूर में मैं स्वयं एक मुस्लिम बहुल क्षेत्र में अर्चिभित रह गई, जहाँ सभी औरतें पर्दे में थीं और उन्होंने सलवार-कमीज़ पहन रखे थे। यहाँ तक कि स्थानीय मुल्लाओं की आज़ा के बिना मर्दों ने भी मुझसे बात नहीं की।

हमें इस बात को भी याद करने की आवश्यकता है कि इस्लामी आतंकवादी दिल्ली और मुंबई जैसे शहरों में मुस्लिम क्षेत्रों में बड़ी आसानी से आश्रय प्राप्त कर लेते हैं। **जिन्होंने लालकिले पर हमला किया था, उन्होंने ज़रूर जामा मस्जिद क्षेत्र में आश्रय लिया होगा** और इंडियन एयर लाइन्स के अपहरणकर्ताओं की सहायता करने वाले मुंबई में थे। यहाँ तक कि मीडिया में रहते हुए भी हम इस बात का बहाना करके ध्यान नहीं देते कि इस्लामिक कट्टरपंथ एक वास्तविक समस्या नहीं है और गृहमंत्रालय 'सिमी' जैसे संगठनों के खिलाफ कोई कार्रवाई करता है तो इसके विरोध में सबसे ज्यादा आवाज़ हमारे पंथनिरपेक्ष टट्टुओं की तरफ से ही उठेगी। **अगर पंथनिरपेक्षता का मतलब आतंकवाद को बर्दाश्त करना है तो शायद यही समस्या है कि हम समय रहते अपनी पंथनिरपेक्षता की धारणा पर पुनर्विचार करें, इससे पहले कि काफी देर हो जाए।**

## वैज्ञानिक पंथ निरपेक्षता का सच

एक ओर देश महात्मा गाँधी द्वारा नमक सत्याग्रह के लिए छोड़े गए दांडी मार्च की 75वीं वर्षगांठ मनाकर उनके योगदान को नमन कर रहा है वहीं दूसरी ओर कम्युनिस्ट उन्हें हिन्दू सांप्रदायिकता के लिए कसूरवार ठहरा रहे हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय के अधीन मुक्त शिक्षण विभाग द्वारा इतिहास के पाठ्यक्रम में छात्रों को यही पढ़ाने की कोशिश की जा रही है। पुस्तक के लेखक जहूर सिद्दीकी 'जनवादी शिक्षक मंच' से संबद्ध हैं जो सीपीआई का एक घटक है। सिद्दीकी का यह मानना है कि गाँधीजी के धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत का आधार 'वैज्ञानिक' नहीं था और वह मुस्लिम आबादी को आकृष्ट नहीं कर पाए। पुस्तक यह भी संकेत करती है कि मुसलमानों की राष्ट्रवादी भावना का उपयोग करने में गाँधीजी विफल रहे। सिद्दीकी यह मानते हैं कि स्वराज्य के लिए रामराज्य का आदर्श रख गाँधीजी ने मुस्लिम आबादी को निरुत्साहित किया और उनमें अलगाववाद की भावना पैदा की।

**इस बात में कोई दो राय नहीं कि व्यक्तिगत जीवन में गाँधीजी आजीवन कट्टर हिन्दू रहे। उनके सबसे बड़े बेटे हीरालाल गाँधी ने इस्लाम कबूल कर अपना नाम अब्दुल्ला रख लिया, गाँधीजी ने उसका परित्याग कर दिया था।** गाँधीजी एक सामान्य भारतीय की तरह ही धर्मभीरु थे। उन्होंने चर्च की मतांतरण गतिविधियों की भी सार्वजनिक निंदा की। हालांकि वह रामराज्य की बात तो करते थे, किन्तु कभी उसके ठोस स्वरूप की चर्चा नहीं की। मुसलमान रामायण पढ़ें या नहीं, गाँधीजी हिन्दुओं को कुरआन पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने रघुपति राघव राजा राम.... भजन में 'ईश्वर अल्ला तेरो नाम' का पद जोड़ा। खिलाफत आन्दोलन में गाँधीजी के कूद पड़ने से खुद कुछ मुसलमान भी चकित थे। उन्होंने मोपला दंगों की अनदेखी की, अब्दुल रशीद द्वारा स्वामी श्रद्धानंद की हत्या किए जाने की घटना को उन्होंने तर्कों से ढकने की कोशिश की, हैदराबाद के बर्बर निजाम के जुल्मों के विरुद्ध खड़े हुए हिन्दुओं और सिखों को सहयोग देने से कांग्रेस को पीछे खींचा। हालांकि वह कहा करते थे कि उनके लिए गोरक्षा स्वतंत्रता पाने से अधिक महत्वपूर्ण है, किन्तु कभी गोहत्या का विरोध नहीं किया, कश्मीर से पाकिस्तानी कबीलाइयों के घुसपैठ और उत्पात के बीच वह भारत सरकार पर पाकिस्तान को 55 मिलियन स्टर्लिंग पाउंड देने के लिए दबाव बनाने के उद्देश्य से आमरण अनशन पर बैठे, देश विभाजन के दौरान पश्चिमी पंजाब में जेहादियों के कत्लेआम से भारत में शरण लेने आ रहे हिन्दुओं-सिखों को उन्होंने पलायन करने से रोकना चाहा, दिल्ली छोड़कर पाकिस्तान चले गए मुसलमानों के घरों और मस्जिदों से हिन्दू शरणार्थियों को निकाल बाहर करने के लिए उन्होंने सरकार को मजबूर किया। संक्षेप में उन्होंने हिन्दू समाज के हितों व सुरक्षा को दूसरी वरीयता दी।

हिन्दुओं का मनोबल तोड़ा और भावनात्मक ब्लैकमेलिंग कर उन्होंने हिन्दू हितों की रक्षा करने की प्रत्येक कोशिश को नाकाम किया। इसके बावजूद हिन्दू समाज से उन्हें अथाह विश्वास और सम्मान मिला, किन्तु मुस्लिमों को तुष्ट करने की अपनी तमाम कोशिशों के बावजूद वह **मुस्लिमों की चार प्रतिशत आबादी को भी अपने पक्ष में नहीं कर पाए।** मुस्लिम समाज के लिए कांग्रेस अछूत ही बनी रही, किन्तु जैसे ही जिन्ना ने 'लड़ के लेंगे पाकिस्तान' का नारा लगाया, मुस्लिम आबादी का अधिकांश भाग उसके पीछे खड़ा हो गया। हालांकि राष्ट्रवादी चिंतक इसके पीछे मुसलमानों के दुराग्रही मानसिकता को जवाबदेह मानते हैं, किन्तु सिद्दीकी इसके लिए गाँधीजी की 'अवैज्ञानिक धर्मनिरपेक्षता' को कसूरवार बताना चाहते हैं। यदि सिद्दीकी वैज्ञानिकता को तार्किकता का पर्याय बताना चाहते हैं तो यह खेदपूर्वक स्वीकार करना होगा कि मुस्लिम समाज में आज भी ऐसी जागृति संभव नहीं दिखती। इस संदर्भ में पोलियो उन्मूलन अभियान का उदाहरण दिया जा सकता है जिसके प्रति मुस्लिमों के एक बड़े वर्ग की अनिच्छा जगजाहिर है। यही कारण है कि पोलियो अभियान के प्रचार में कुछ मुस्लिम सितारों को शामिल करने की पहल की गई है। वास्तव में मज़हब विशेष की कट्टर अवधारणा इस समस्या की जड़ है। सिद्दीकी के कथित 'वैज्ञानिक आधार' का अर्थ यदि मार्क्सवाद है तो हमें और निराशा हाथ लगेगी। कम्युनिस्ट मार्क्सवाद को वैज्ञानिक सिद्धांत बताते नहीं अघाते, किन्तु यह कटु सत्य है कि प्रसिद्ध मुसलमान कम्युनिस्टों की मौजूदगी के बावजूद मार्क्सवाद मुस्लिम समाज में अपनी पैठ नहीं बना सका। अलग **पाकिस्तान के सृजन के लिए कम्युनिस्टों ने मोहम्मद अली जिन्ना की भरपूर मदद की, किन्तु पाकिस्तान के गठन के बाद**

ही पाकिस्तानी हुक्मरानों ने अपनी सीमाओं से कम्युनिस्टों को खदेड़ भगाया। विडंबना यह है कि वही कम्युनिस्ट पश्चिम बंगाल में मदरसों के प्रसार के लिए करोड़ों रुपये की राजकीय सहायता देते हैं।

यह कटु सत्य है कि गाँधीजी ने मुस्लिमों की दुराग्रही मानसिकता को हवा दी। सर सैयद अहमद खान की नसीहत पर मुस्लिम समाज ने खुद को कांग्रेस से अलग कर रखा था। सैयद अहमद खान के अनुसार कांग्रेस हिन्दू हितों के प्रति समर्पित थी। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने लिखा है, 'सर सैयद अहमद खान के नेतृत्व में मुस्लिम समुदाय कांग्रेस से कटा हुआ था। 'हिन्दू कांग्रेस' कहकर उसकी जमकर आलोचना की जाती थी। हम अपने इस राष्ट्रवादी काम में मुसलमानों का सहयोग प्राप्त करने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे थे। कई बार हमने मुस्लिम प्रतिनिधियों के आने-जाने का खर्च उठाया और उन्हें अन्य सुविधाएं दीं। यहाँ तक कि गोखले ने भी अपने एक पत्र में टिप्पणी की है कि सात करोड़ मुसलमान राष्ट्रीय आन्दोलन से कमोवश निरपेक्ष थे।'

इलाहाबाद, लखनऊ, मेरठ, लाहौर, मद्रास और अन्य जगहों के मुसलमानों ने कांग्रेस के विरुद्ध प्रस्ताव पारित किया। दि मोहम्मडन ऑब्जर्वर, दि विक्टोरिया पेपर, दि मुस्लिम हेराल्ड, दि रफीक-ए-हिन्दू, दि इंपीरियल आदि अखबारों ने एक स्वर से भारतीय कांग्रेस की आलोचना की। बंगाल की सेंट्रल नेशनल मुहम्मडन एसोसिएशन, कोलकाता की मोहम्मडन लिटररी सोसायटी, मद्रास का अंजुमन-ए-इस्लामिया आदि मुस्लिम संगठनों ने कांग्रेस के लक्ष्यों और गतिविधियों की कड़े शब्दों में निंदा की। खुद सैयद अहमद खान ने कांग्रेस को टक्कर देने के लिए युनाइटेड इंडिया पैट्रियोटिक एसोसिएशन और एंग्लो-ओरिएंटल एसोसिएशन का गठन किया था।

कांग्रेस के अग्रिमपात के प्रारंभिक नेताओं की मानसिक बनावट यूरोपियों की तरह थी। वे अधिकांश मौकों पर आपस में अपनी बात अंग्रेज़ी में ही बेहतर समझते थे। सैयद अहमद खान भी हालांकि अंग्रेज़ियत से लैस था, किन्तु वह अपने समुदाय को मध्यकालीन रूढ़िवाद से निजात दिलाना चाहता था। वह पहला भारतीय मुस्लिम था, जिसने यूरोप का दौरा किया। उसने 1865 में 'साइंटिफिक सोसायटी' का गठन किया ताकि अंग्रेज़ी की उपयोगी पुस्तकों का उर्दू में अनुवाद कर रहे मुस्लिमों के बीच वितरित किया जा सके। विकास का पक्षधर होने के बावजूद आखिर किस कारण से सैयद अहमद खान ने कांग्रेस का विरोध किया? मुस्लिम समाज को मध्यकालीन रूढ़िवाद से निजात दिलाने की पहल करने वाला व्यक्ति उन्हें राष्ट्र की मुख्यधारा में शामिल होने से रोकना चाहता था।

क्या यही वैज्ञानिक पंथनिरपेक्षता थी? भारत में हिन्दू और मुसलमान, दो राष्ट्रों के अस्तित्व की बात सबसे पहले सैयद अहमद खान ने ही की थी। उसकी नीतियों के परिणामस्वरूप ही 1906 में ढाका में मुस्लिम लीग की नींव पड़ी। यह भारतीय राजनीति में गाँधीजी के पदार्पण से करीब एक दशक पहले की घटना है। यह स्वीकार करना होगा कि मुस्लिमों के एक बड़े वर्ग ने कांग्रेस को नकारा, क्योंकि वे स्वतंत्रत भारत में बराबरी के अधिकार से नहीं रहना चाहते थे। उन्हें इस्लामी राज की तरह मुस्लिमों का वर्चस्व अधिक प्रिय था, और रहेगा। यही चाहत सेकुलरिस्टों के लिए प्राणवायु की तरह है। आश्चर्य नहीं कि सेकुलरिस्ट अलगाववादी मानसिकता को अपना पूर्ण समर्थन देते हैं।

**'समाज प्रवाह' मासिक, 10, गणेशबाग, जवाहरलाल नेहरू रोड, मुलुंड, (प.) मुंबई**

## अरुन्धति वसिष्ठ अनुसंधान पीठ प्रयाग : एक नए न्यास के रूप में

अरुन्धति वसिष्ठ अनुसंधान पीठ न्यास की 3 जून 2009 को हुई बैठक मालवीय स्मृति भवन, नई दिल्ली में न्यास के संस्थापक न्यासी मा. अशोक जी सिंहल की अध्यक्षता में संपन्न हुई, जिसमें न्यास के स्थायी न्यासी डॉ. मुरली मनोहर जोशी, श्री अरुण शौरी, न्यायमूर्ति श्री रामा जॉयस, डॉ. महेश शर्मा, डॉ. सुरेन्द्र जैन सहित विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में डॉ. सुब्रह्मण्यम् स्वामी, डॉ. प्रवीण तोगडिया, प्रो. विश्वनाथन (पूर्व कुलपति अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नै), प्रो. सत्य प्रकाश त्रिपाठी; पूर्व कुलपति जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, प्रो. राजेन्द्र प्रसाद आई.आई.टी. दिल्ली, प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी इलाहाबाद विश्वविद्यालय, श्री तरुण विजय; निदेशक श्यामाप्रसाद मुखर्जी अनुसंधान न्यास, श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल; पूर्व पुलिस महानिदेशक एवं डॉ. महेश चन्द्र गुप्त; पूर्व निदेशक राजभाषा आदि गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

बैठक के प्रारंभ में प्रस्ताविकी प्रस्तुत करते हुए संस्थापक न्यासी एवं बैठक के अध्यक्ष मा. श्री अशोक सिंहल ने वर्तमान समय में वैश्विक बंधुत्व की दृष्टि से समाजवाद एवं पूंजीवाद इन दोनों दर्शनों के पुनरीक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि भौतिक विकास की समाजवादी अवधारणा जिसमें शक्ति राज्य के अंदर निहित रहती है उसका अपने ही जन्म स्थान में पतन हो चुका है दूसरी पश्चिम राष्ट्रों एवं अमेरिका में अपनाई गई पूंजीवादी व्यवस्था व्यक्ति को अनवरुद्ध स्वतंत्रता प्रदान करती है। पतन की तरफ बढ़ रही यह व्यवस्था भी आज किसी भी व्यक्ति के नियंत्रण से परे है।

पं. जवाहर लाल नेहरु के समय से चले आ रहे अंधानुकरण के परिणाम स्वरूप हमने मान लिया कि समाजवादी व्यवस्था ही विकास का सुनिश्चित मार्ग है तथा देश की पहचान एवं लक्ष्य को उसी के अनुरूप पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक, समाजवादी राज्य के रूप में बनाया गया। हमारे देश ने नब्बे के दशक के प्रारंभ में वैश्वीकरण एवं उदारीकरण के नाम पर पाश्चात्य पूंजीवादी दर्शन को अपनाया। परन्तु अमेरिकी अर्थव्यवस्था के पतनोन्मुख होने के परिणाम स्वरूप आज यह प्रश्न खड़ा हो गया है कि दोनों ही व्यवस्थाओं में कहीं न कहीं कमी है। इस वैश्विक समस्या का समाधान पं. दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद में निहित है। यह मानव जीवन के सभी पहलुओं को आच्छादित करता है तथा वर्तमान समयकी समस्या का उत्तर है। यह सांसारिक इच्छाओं की पूर्ति तथा धनार्जन को धर्म के आधार पर एक साथ जोड़ कर के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त कराती है। हमें इस एकात्म दर्शन को जन-आन्दोलन के रूप में खड़ा करना है।

अरुन्धति-वसिष्ठ अनुसंधान पीठ का उद्देश्य समयानुकूल राष्ट्रीय नीतियों के निर्धारण में सहायक होने के साथ ही विश्वविद्यालयों एवं अन्य स्थानों में निहित हमारे देश के बौद्धिक वर्ग को जागृत करना है। आप सभी इस न्यास के मार्गदर्शक एवं निर्देशक हैं। विश्वविद्यालय स्तर पर आप सभी के द्वारा परीक्षित एवं निर्देशित शोधकार्य एक अधिक ज्ञानवान एवं नीतिपरक विद्वता निर्माण करने में सक्षम होगा जो राष्ट्र एवं विश्व को सही दिशा दे सकेगा।

**श्री अरुण शौरी** ने वर्तमान समय में संसद में नीतियों के निर्धारण की अवस्था पर चिन्ता व्यक्त करते हुए नीतियों के निर्धारण में बौद्धिक वर्ग की भूमिका स्थापित करने पर जोर दिया। श्री सुब्रह्मण्यम् स्वामी ने विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से शोध कार्य किए जाने पर पोजीशन पेपर प्रस्तुत किए जाने तथा उनके प्रकाशन की बात कही जिससे सांसदों एवं नीति निर्धारकों को एक दिशा प्राप्त हो सके। **न्यायमूर्ति श्री रामा जॉयस** ने प्राचीन भारतीय न्याय व्यवस्था की श्रेष्ठता की चर्चा करते हुए कहा कि ज्ञानेश्वर रचित मिताक्षरा में दुनिया के सर्वश्रेष्ठ न्याय व्यवस्था का वर्णन किया गया है। भारत के श्रेष्ठ विधि एवं श्रेष्ठ संविधान की रचना धर्म के आधार पर की गई थी। राजधर्म ही वह संविधान है जिसके आधार पर राज्यकर्ता सुजनों की रक्षा, दुष्टजनों की दण्ड, पक्षपात रहित न्याय एवं राष्ट्र की रक्षा कर सकते हैं। धर्म सभी मनुष्यों के विधि सम्मत व्यवहार का आधार होना चाहिए तथा राजधर्म राज्यकर्ताओं के व्यवहार का आधार होना चाहिए। राजधर्म राजनेताओं के राजनैतिक चिन्तन का आधारभूत सिद्धांत होना चाहिए। एकात्म मानववाद हमारे राजधर्म का ही एक

अंग है। यह विश्व मानवधर्म है। उन्होंने बताया कि ज्ञानेश्वर अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र से विधि एवं न्याय से संबंधित तीन पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है तथा वे चाहते हैं कि प्रत्येक विधि विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय में ज्ञानेश्वर चैयार स्थापित की जाए।

**डॉ. महेश शर्मा** ने एक ऐसी केन्द्रीय धूरी बनाने की बात कही जो संसद एवं सरकार में बैठे लोगों को इन मुद्दों पर कार्य करने के लिए प्रेरित कर सके। उन्होंने विश्वविद्यालय एवं संस्थानों के परिसर में अध्यापकों एवं छात्रों के मध्य परस्पर आदान-प्रदान हेतु पाठ्यक्रम चलाए जाने की बात कही क्योंकि विचारों का परस्पर आदान-प्रदान मनोवैज्ञानिक दृष्टि से बहुत महत्व रखता है। **जीवाजी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. सत्य प्रकाश त्रिपाठी** ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ-साथ व्यवहारिक एवं समायानुकूल दृष्टि अपनाए जाने पर जोर दिया।

**प्रो. गिरीश चन्द्र त्रिपाठी** ने शक्तिशाली तर्कों के आधार पर अपनी बातें प्रस्तुत किए जाने की आवश्यकता बताई। **डॉ. प्रवीण भाई तोगड़िया** ने अमेरिका आदि देशों में चल रहे ऐसे नीति-निर्धारक कार्यों का उल्लेख करते हुए उन्हें प्राप्त होने वाले संसाधनों की चर्चा की तथा हमारे कार्य में संसाधन, प्रचार-प्रसार एवं क्रियान्वयन में क्या-क्या बाधाएँ उत्पन्न हो सकती हैं तथा उनका किस प्रकार से समाधान किया जाना चाहिए इन बिन्दुओं पर चर्चा की।

बैठक का समापन करते हुए **डॉ. मुरली मनोहन जोशी** ने अनुसंधान पीठ के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए कहा कि भारत का ज्ञान-विज्ञान अत्यंत प्राचीन काल में भी अति श्रेष्ठ था, परंतु यह दुर्भाग्य का विषय है कि हमारे लोगों को इसका ज्ञान नहीं है। हम आज बड़े सहजता से अपनी प्राचीन परंपरा को समायानुकूल न होने की बात कहते हैं लेकिन यह देखने में आता है कि चिकित्सा, पशुपालन, कृषि, वनस्पति शास्त्र, तकनीकी राजनय आदि सभी क्षेत्रों में हमारे पूर्वज वर्तमान अनुसंधानों से भी आगे का ज्ञान रखते थे। उन्होंने अनेक उद्धरणों एवं अनुभव के आधार पर भारतीय ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न श्रेष्ठ तत्वों की व्यापक व्याख्या की तथा हमारे चिंतकों एवं विद्वानों को इन विषयों पर अनुसंधान पर राष्ट्र एवं संपूर्ण विश्व को एक नई दिशा प्रदान करने हेतु प्रेरित करने का गुरुतर कार्य अनुसंधान पीठ द्वारा किए जाने की बात कही।

संपूर्ण बैठक में की गई चर्चा के सार तत्व को रेखांकित करते हुए श्री अरुण शौरी ने कहा कि मुख्यतः चार बातें सामने आई हैं :-

- |   |                                 |
|---|---------------------------------|
| 1. विद्वत् समाज एवं अनुसंधानकर्ताओं को अपने प्राच्य ज्ञान-विज्ञान | की तरफ पुनः प्रवृत्त करना       |
| 2. राष्ट्रीय परिवेश एवं प्रकृति को ध्यान में रखकर अनुसंधान के     | लिए प्रेरित करना                |
| 3. विश्वविद्यालय एवं संस्थाओं के परिसर को केन्द्र में रखकर        | कार्य विस्तार करना।             |
| 4. विद्वानों एवं शोधकर्ताओं के बीच आपसी संपर्क एवं विचार          | विनिमय को स्थापित करना। बैठक का |
- संचालन अनुसंधान पीठ के सचिव डॉ. सुरेन्द्र जैन ने किया।

-डॉ. चन्द्रप्रकाश सिंह

संयोजक, अरुन्धति वसिष्ठ अनुसंधान पीठ

## समर्पण

-ले. डॉ. शमी शर्मा

रक्त का कण कण है मां ! तुझको समर्पित हो,  
जीवन का पल पल मां, तुझको ही अर्पित हो।  
काल सीमा के क्षणों में, राष्ट्र का यश गान  
अमर वैभव अस्मिता से, स्तवन अर्पित हो।

प्राण दीपक भी जला हो स्वर प्रशंसा से भरा हो,  
बढ़ रहे हों हम निरंतर लक्ष्य से बस पथ सजा हो।  
आँधियों तूफान में विश्वास लेकर सब बढ़े हों,  
भरत-भू के चरण रज का तिलक माथे पर लगा हो।

दीप्त हो पथ बलि का जब भी हो आह्वान मां का,  
प्रण के शस्त्र हैं अर्पित, ध्वस्त करने आराति दल को।  
पग तो क्या ? मां ! कुदृष्टि, तक भी सहन हम न करेंगे,  
दीप्त कर देंगे दिग् दिगन्तर रक्त से अभिषेक होंगे।

बलिदानी पथ पर प्राण का उपहार अर्पित,  
तेरा दिया हुआ यह, अब तुम्हीं को है समर्पित।  
तेरे कण कण में अमर वैभव दीप्त मेरे पद नखों में  
असंख्य सिर बलिदान के, हों हार तेरे कंठ अर्पित।

सेराथाना, कांगड़ा-176 056 (हि.प्र.)

## देश को भ्रान्त करती कांग्रेस सरकार

बड़े दुःख का विषय है कि जब से मुंबई में आतंकवादी हमला हुआ है तब से कांग्रेसी सरकार देश की जनता को दिग्भ्रमित करने में लगी हुई है। वह देशवासियों की सुरक्षा हेतु गंभीर कदम उठाने के स्थान पर इस बात में लगी हुई है कि कैसे पाकिस्तान से यह मनवाया जाए कि भारत में फैलते आतंकवाद के पीछे पाकिस्तानियों का हाथ है। कांग्रेसी सरकार इस बात का भरसक प्रयास कर रही है कि पाकिस्तान अपने देश में रह रहे आतंकवादियों को भारत को सौंपे। वर्तमान प्रधानमंत्री पाकिस्तान को कड़े संदेश भेजकर ही अपने दायित्वों की इतिश्री मान लेते हैं। कभी कहते हैं पाकिस्तान हाँफने लगा है तो कभी उसे प्रत्यर्पण पर फँसा मान लेते हैं। वह चाहते हैं कि अमेरिका पाकिस्तान को आतंकवादी देश घोषित करे। परन्तु उनकी अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करने की आशा निरर्थक सिद्ध हो रही है। प्रधानमंत्री चाहे जितना भी कहे कि भारत पाकिस्तान से नहीं डरेगा परन्तु वह तो जब चाहे, जहाँ चाहे विस्फोट करवाने में सफल ही रहता है।

सरकार के वक्तव्यों को प्रसारित करते-करते सारे समाचार-पत्र और दूरदर्शन भी जनता को दिग्भ्रमित कर रहे हैं। इस्लामिक देशों द्वारा पोषित आतंकवाद को पालता पाकिस्तान भारत की कदापि सहायता नहीं कर सकता। उसके लिए यह सब कुछ आतंकवाद नहीं अपितु शेष बचे भारत को दारुल-इस्लाम बनाने का सुनियोजित कार्यक्रम है और इस हेतु सारे इस्लामिक देश और अन्य देशों में बसने वाले मुसलमान उसके साथ हैं।

भारत के विद्वान विचारक 2020 तक भारत को एक आर्थिक शक्ति के रूप में खड़ा देखने का स्वप्न संजोए हुए हैं तो दूसरी ओर पाकिस्तान की गुप्तचर एजेंसी आई.एस.आई. की इसी हेतु से भारत के उत्तर तथा पश्चिम में निरंतर आतंकवादी गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं। मुंबई में हुआ हमला भी उसी का एक महत्वपूर्ण भाग था।

“पावर पालिटिक्स” नामक पत्रिका के 6 जनवरी के अंक में प्रकाशित एक लेख के अनुसार आई.एस.आई. ने पाकिस्तानी सेना का मनोबल बढ़ाते हुए उन्हें दो मानचित्र प्रेषित किए हैं। उसमें से एक के अनुसार 2012 तक मुंबई मुस्लिमाबाद घोषित कर दिया जाएगा और दूसरे मानचित्र के अनुसार 2020 तक सारा उत्तर भारत इस्लामिक राज्य बना दिया जाएगा। दक्षिण भारत को Disputed Territory घोषित कर दिया जाएगा। साथ ही बंगलादेश, नेपाल और श्रीलंका उसके पड़ोसी होंगे। उसी पत्रिका के अनुसार जैश-ए-मोहम्मद नामक आतंकी संगठन का एक सदस्य गुलाम फरीद एक पाकिस्तानी सैनिक है जिसकी पेंटी संख्या है 4319184, 10 आज़ाद कश्मीर रेजिमेंट। यह पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के रूपड़ी गांव का निवासी है जो मिम्बर जिले में स्थित है। हरकत-उल-जिहाद का एक आतंकी नॉर्थ वेस्ट फ्रन्टियर प्राविन्स का मुहम्मद अब्दुल्ला और एक पाक स्थित पंजाब के डेरा नवाब का रहने वाला मुहम्मद इमरान है। ये सब कराची से ढाका गए ताकि कोलकाता से भारत में घुस सकें और वहाँ से जम्मू। जम्मू में पकड़े गए आतंकवादियों के माध्यम से ही यह सारी सूचना उपलब्ध हुई है। आई.एस.आई. भारत को जल और थल दोनों ओर से दबोचने की योजना पर कार्य कर रही है। दूसरी ओर पाकिस्तान अपनी सेना को सीमाओं के निकट लाता जा रहा है। अपने सभी महत्वपूर्ण सैनिक स्थलों की रक्षा कर रहा है और भारत को परमाणु युद्ध की धमकी दे रहा है।

अतः प्रधानमंत्री महनमोहन सिंह एवं विदेश मंत्री प्रणव मुखर्जी से यह निवेदन है कि वे पाकिस्तान से सहयोग की मृगमरीचिका को छोड़ें। ईमानदारी के साथ आतंकवादियों को सौंपने की मांग को छोड़ कर अपनी शक्ति उनके प्रति लगाए जो हमारे ही देश की जेलों में रह रहे हैं। अफजल को फाँसी दें। अपने देश में चल रहे प्रशिक्षण शिविरों को ध्वस्त करें। राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार एम.के.नारायणन् ने स्वयं माना है कि देश में चल रहे आठ सौ आतंकवादी सेलों का शासन को पता है। हमारी गुप्तचर एजेंसी को यह भी ज्ञात है कि देश में कहाँ कहाँ आतंकवाद के लिए विदेश से पैसा आ रहा है और कहाँ-कहाँ स्थानीय शक्तियाँ उन्हें बल दे रही हैं।

हमारे प्रधानमंत्री सिमी के उस नेटवर्क को नष्ट क्यों नहीं करते जो उत्तर प्रदेश के 34 जिलों में अपने पैर जमा चुका है, जिसके पास सैंकड़ों पूर्णकालिक सदस्य और हज़ारों की संख्या में कार्यकर्ता हैं, जिसको कुवैत, शिकागो, रियाद और न जाने कितने देशों के इस्लामिक संगठनों का समर्थन और सहयोग प्राप्त है।, जो हुजी के लिए हर संभव कार्य करता है,

जिसके विरुद्ध बम विस्फोटों के अनेक आरोप सिद्ध हैं। जो लोग पाकिस्तानी आतंकवादियों को हर प्रकार से सहयोग देते हैं उन्हें देशद्रोही होने के अपराध में दण्ड देकर जनता के समक्ष प्रस्तुत करने में उन्हें किसका डर सता रहा है। गुप्तचर विभाग निरंतर सूचनाएं देता रहता है कि किस नगर में कितने ऐसे पाकिस्तानी नागरिक हैं जो वीजा लेकर तो आए परन्तु लौटे ही नहीं। प्रधानमंत्री उनके विरुद्ध कदम उठाएं। निरंतर आपराधिक गतिविधियों में पकड़े जा रहे बांग्लादेशियों के विरुद्ध भी कठोर कदमों की आवश्यकता है। तीन करोड़ से अधिक जो बांग्लादेशी भारत में घुस चुके हैं उन्हें निकालने में भला प्रधानमंत्री को क्यों संकोच हो रहा है? इनमें से किसी भी कार्य को करने के लिए प्रधानमंत्री को किसी भी प्रकार की पाकिस्तानी सहयोग की आवश्यकता नहीं है। कम से कम इसे तो करके वे अपना कर्तव्य पालन करें।

देश की स्थिति को देखते हुए केवल यही निष्कर्ष निकलता है कि कांग्रेसी सरकार के समक्ष देश की जनता की सुरक्षा गौण है, अपनी सत्ता बनाए रखना प्रमुख है। वह अपना वोट बैंक खिसक जाने के भय से कोई भी कठोर कदम नहीं उठाती है, फिर चाहे सेना का मनोबल टूटे या पुलिस का, गुप्तचर एजेंसियों द्वारा इकट्ठी की गई सूचना व्यर्थ जाए या न्यायालयों का समय, फिर चाहे सीमाएं असुरक्षित हो जाएं या देश के भीतर देशद्रोही तत्व पाकिस्तानी झण्डे लहराते रहें।

अतः कांग्रेसी सरकार से निवेदन है कि एक बार भयमुक्त होकर देश की आतंकवादियों से सुरक्षा करे, यह उनका दायित्व है। यदि उन्होंने इस हेतु उचित प्रयास किए तो देश में ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो उन्हें उनके सत्कर्मों के लिए समुचित पुरस्कार स्वरूप वोट देकर पुनः मंत्री और प्रधानमंत्री पदों पर आसीन करवा सकते हैं।

डॉ. शशिबाला नयागंज, गाज़ियाबाद

## मीडिया का हिन्दू द्वेष

-डॉ. शशिकांत गर्ग

इंग्लैण्ड के ग्लोसो हवाई अड्डे पर बम विस्फोट के संबंध में जब उधर रहने वाल भारत के डॉ. हनीफ से पुलिस ने पूछताछ की तो इतने मात्र से हमारे प्रधानमंत्री सो नहीं सके थे, परन्तु लगभग उन्हीं दिनों मुंबई में दो घंटे में सात ट्रेनों में हुए बम विस्फोटों में 187 लोग मारे गए थे, तब प्रधानमंत्री की नींद में कुछ फर्क नहीं पड़ा था।

राष्ट्रीय विकास परिषद् की मीटिंग में प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि देश के संसाधनों पर मुसलमानों का पहला अधिकार है, परन्तु प्रधानमंत्री के भेदभाव पूर्ण स्वभाव की मीडिया ने उचित शब्दों में निंदा नहीं की थी।

सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय को रामसेतु के संबंध में दिए गए शपथ पत्र में राम को काल्पनिक पात्र कहा था और कहा था कि "राम नहीं तो रामसेतु कैसा"।

इस्लामी विश्वविद्यालय के लिए भूमि देने वाली जम्मू कश्मीर सरकार ने अमरनाथ श्राइन बोर्ड से भूमि वापस ली थी, इन बातों पर मीडिया ने योग्य शब्दों में आलोचना नहीं की थी। परन्तु हिन्दुओं के साथ अन्याय की शृंखला इतनी तीव्र गति से आगे बढ़ रही है कि ऊपर कही बातें अब पुरानी हो चुकी हैं तथा उनकी गइराई से उतरना व्यर्थ है। मैं यहाँ एक ताज़ा घटना का उल्लेख करता हूँ।

पीलीभीत से लोकसभा के प्रत्याशी श्री वरुण गांधी ने एक सभा में कहा था जो हिन्दुओं की ओर आँख उठाएगा उसका हाथ काट दिया जाएगा, उनके इस वक्तव्य पर टीवी के समाचार चैनल को हिन्दू संस्थाओं पर प्रहार करने का अच्छा अवसर मिल गया।

समाचार चैनलों का प्रभाव इतना व्यापक होता है कि इसके प्रभाव से मानवाधिकार आयोग, चुनाव आयोग यहाँ तक कि न्यायपालिका भी प्रभावित होती हैं, अब थोड़ा घटना की गहराई में जाइए। श्री वरुण गांधी पीलीभीत की ऐसी बस्ती में पहुँचे जहाँ हिन्दू अल्पसंख्या में हैं, वहाँ कुछ समय पूर्व दो हिन्दू लड़कियों का अपहरण तथा बलात्कार मुस्लिम समुदाय द्वारा हुआ था। वहाँ पहुँचने पर हिन्दुओं ने उन्हें घेर लिया और कहा यदि भाजपा नेता हमारी रक्षा नहीं कर सकते तो यहाँ आते क्यों हैं? क्या प्रचार के लिए पहुँचे वरुण को समुचित उत्तर नहीं देना चाहिए था? क्या वे यह कहते कि 'तुम जानो या तुम्हारा राम जाने'।

जब श्री वरुण गांधी वहाँ पहुँचे तो लोग भयभीत तथा सहमे हुए थे, उनका भय दूर करने के लिए अपराधियों के विरुद्ध कठोर भाषा का प्रयोग उचित तथा आवश्यक था। परंतु मीडिया को बलात्कारियों की शिकार बनी लड़कियों से कोई सहानुभूति नहीं है, उन्हें श्री वरुण के बहाने हिन्दू नेताओं और संस्थाओं पर बरसने का अवसर मिल गया। यह ठीक वैसा हुआ जैसा कि उड़ीसा में ईसाइयों पर हुए आक्रमणों की चर्चा तो हुई परंतु ईसाइयों के द्वारा मारे गए स्वामी लक्ष्मणानंद तथा अन्य साध्वी और साधुओं को मीडिया भूल गया। इसी प्रकार गुजरात दंगों में मुसलमानों की हानि की चर्चा तो हुई परंतु गोधरा में ट्रेन में 59 हिन्दू तीर्थ यात्रियों महिलाओं और बच्चों को जिन्दा जलाने की घटना को भुला दिया गया।

आज आतंकवादियों के मजहब के विषय में एक कहावत प्रसिद्ध हो गई है कि प्रत्येक मुसलमान आतंकवादी नहीं है, परन्तु प्रत्येक आतंकवादी मुसलमान है, परन्तु वोटों की राजनीति करने वालों को अपने मतदाताओं पर यह लांछन सहन नहीं हुआ और हिन्दू भी आतंकवादी होता है, यह साबित करने के लिए चार साल पहले बेचे गए स्कूटर को आधार बनाकर जबलपुर के एक आश्रम की एक साध्वी ठाकुर प्रज्ञा सिंह को हिरासत में ले लिया गया। उन्होंने चार वर्ष पहले जो स्कूटर बेच दिया था, पुलिस द्वारा यह आरोप लगाया गया कि मालेगांव बम विस्फोट में उसका प्रयोग हुआ था, माना जाता है कि वोटों की राजनीति करने वाले दिल्ली के नेताओं के इशारे पर साध्वी को डरा धमकाकर ऐसे अपराध स्वीकार कराने के उपाय किए गए, जो कि साध्वी ने किए ही नहीं थे, उनके बार-बार ब्रेन मैपिंग तथा नारको टेस्ट किए गए, जब इन टेस्टों में कुछ नहीं मिला तो कहा गया कि साध्वी ने अपनी योगविद्या से टेस्टों का अपने ऊपर प्रभाव नहीं होने दिया, अर्थात् साध्वी के विरुद्ध कोई सबूत नहीं मिला। यदि इतने टेस्ट पकड़े गए आतंकवादियों के ऊपर होते तो आतंकवादियों के सैकड़ों साथी तथा अभिभावक पकड़े जाते तथा मुंबई में निर्दोष लोगों की लाशों के ढेर नहीं लगते।

साध्वी की गिरफ्तारी को दिखाए बिना 13 दिनों तक हिरासत में रखा गया, तथा उन्हें इतनी शारीरिक प्रताड़ना दी गई कि उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा। अस्पताल में उनकी बिगड़ती हाल के कारण इमरजेंसी वार्ड में रखना पड़ा, वे वहाँ ठीक नहीं हुई तो उन्हें दूसरे अस्पताल ले जाया गया वहाँ भी ठीक नहीं हुई तो तीसरे अस्पताल में ले गए।

उनसे पूछताछ के समय प्रायः स्त्री पुलिस नहीं रखी गई, उन्हें निर्वस्त्र करने की धमकी दी गई तथा दीपावली के दिन उन्हें भूखा रखा गया। क्या कभी किसी मुस्लिम आतंकवादी को ईद के दिन भूखा रखा गया है। ये तथ्य उन्होंने शपथ पत्र द्वारा अदालत को बताए। उनके शपथ पत्र का समाचार केवल हिन्दू पत्र-पत्रिकाओं में छपा, शेष अधिकतर पत्र-पत्रिकाओं द्वारा तथा टीवी न्यूज़ चैनलों ने इस समाचार पर पर्दा डाल दिया। हमारे मीडिया के लिए साध्वी पर हुए अत्याचार समाचार ही नहीं थे। कहाँ चले गए वे खोजी पत्रकार जो मंत्री तथा सांसदों के घर जाकर स्टिंग ऑपरेशन कर आते हैं।

परंतु शपथ पत्र देने के बाद भी साध्वी की परेशानी कम नहीं हुई उनके साथ न्यायिक हिरासत में भी दुर्व्यवहार हुआ, जिसके कारण उन्हें अनशन करना पड़ा, जिससे उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया और उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा। बाल ठाकरे जी ने “सामना” में लिखा कि साध्वी को भोजन में कीड़े दिए जा रहे हैं। जेल में उन्हें अपराधियों के बीच रखा गया है, उनके वकील के अनुसार मुमताज़ शेख नाम की अपराधी ने उन्हें कटोरा मारकर घायल कर दिया है।

गिरफ्तारी के आरंभ के दिनों में मीडिया जितने उत्साह के साथ पुलिस के बयानों को प्रकाश में ला रहा था, अब वह उत्साह ठंडा पड़ गया है, क्योंकि प्रारंभिक दिनों में पुलिस के बयानों से हिन्दुत्व बदनाम होता था, अब हिन्दू निर्दोष साबित हो रहा है। मीडिया को जितना उत्साह हिन्दू संस्थाओं तथा नेताओं को बदनाम करने में रहता है उतना उत्साह न्याय प्रदान करने में नहीं रहता।

साध्वी पर अत्याचार इसलिए हुए क्योंकि सरकार को यह साबित करना था कि हिन्दू भी आतंकवादी होता है।

(लेखक भारतीय लोक संघ के महामंत्री हैं।)

मकान नं. 152, वॉर्ड नं. 2, अहीर वाड़ा, बल्लभगढ़, हरियाणा

संपादकीय टिप्पणी : प्रचार माध्यम और कांग्रेस के ऐसे सेक्युलरवाद को धिक्कार, धिक्कार, धिक्कार।

## लाल झण्डे ने किया लालगढ़ लहू-लुहान

**-विनोद बंसल**

पूरे देश में वैचारिक क्रान्ति लाकर देश की आजादी में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए सदैव जाना जाने वाला बंगाल आज माओवाद की आग में बुरी तरह झुलस रहा है। देश को आजाद कराने के बाद देशवासियों के चहुमुखी विकास का सपना देखनेवाले नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जैसे स्वतंत्रता सेनानी ने शायद कभी कल्पना भी नहीं की होगी कि जिस आजादी के लिए लाखों लोगों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया, उसको आज के सत्ता के भूखे राजनेता जनता का शोषण करते-करते स्वयं निगल जाएंगे। पूरे विश्व से समाप्त प्रायः कम्युनिज़्म आज भी पश्चिमी बंगाल की शासन व्यवस्था पर हावी होकर गत तीन दशकों से अधिक समय से वहाँ की गरीब, अशिक्षित व शोषित जनता को दरतीं, हथौड़े व कुदाल की जगह फरसे, भाले व बन्दूक उठाने को मजबूर कर रहा है।

अपने आपको गरीबों के मसीहा व मजदूरों के हमदर्द बताने वाले कम्युनिस्टों ने अपने 32 वर्षों के शासन काल में राज्य में लगे लगभग सभी कारखानों को बन्द कराकर गरीबों की मजदूरी तो छीनी ही साथ में जमींदारों व खेतिहर मजदूरों तथा कारखाना प्रबंधकों व कामगारों के बीच भी वैमनस्य का गहरा बीजारोपण कर उन्हें आजीविका से भी दूर कर दिया। अपनी राजनैतिक चमक बरकरार रखने हेतु पार्टी कार्यकर्ताओं ने अपने संविधानेतर सामानांतर कार्यकर्ता शासन प्रणाली के जरिये गाँवों के आदिवासी, भोले व गरीब लोगों को केवल मार्क्सवादी पार्टी के झंडे के नीचे आने के लिए मजबूर कर दिया। मार्क्सवादियों के लाल झण्डे द्वारा आए दिन हड़ताल, तालेबंदी व उद्योगपतियों को तंग किये जाने के कारण एक-एक कर सभी बड़े कल कारखानों ने बंगाल से दूर अपने आशियाने बना लिए। परिणामतः राज्य का गरीब व आदिवासी भुखमरी से बचने के लिए कम्युनिस्टों, मार्क्सवादियों व अब माओवादियों के साथ खड़ा होकर हथियार उठाने को मजबूर हैं। मार्क्सवाद का असली सिद्धान्त यही है कि क्रान्ति बन्दूक की नाल से निकलती है, बैलेट पेपर से नहीं। इसी कारण, हिंसा के माध्यम से सामाजिक बदलाव लाने के सिद्धान्त में विश्वास रखने वाले कम्युनिस्टों ने पूरे देश में प्रतिबन्धित माओवादियों को राज्य में हिंसा के लिए खुली छूट दे रखी है।

सामान्य तौर पर यह बात समझ से परे है कि इतने भारी भरकम सुरक्षा बन्दोवस्त वाले देश में माओवादी एक जिले के करीब हजार गाँवों को स्वतंत्र घोषित कर, पुलिस स्टेशनों आदि को अपने कब्जे में लेकर वहाँ राज्य के भीतर एक और राज्य की स्थिति उत्पन्न कर दें और वहाँ की सरकार तथा केन्द्र की खुफिया एजेंसियों को कानों कान खबर भी न लगे। क्या यह सब रातों रात हो गया? नहीं! **अलगाववाद का बीज मार्क्सवाद की देन है।** माओवादियों ने आदिवासियों की दुर्दशा को आधार बनाकर उनके मन में इतना गुस्सा व द्वेष भर दिया है कि उसका निराकरण सिर्फ सैन्य कार्यवाही से सम्भव नहीं दिख रहा क्योंकि इस समय माओवादियों के साथ बड़ी संख्या में पीड़ित निरपराध वनवासी जनता है जो उनके झांसे में आकर राज्य के शासन तंत्र के खिलाफ पूरी तरह विद्रोह पर उतारू है।

दरअसल **लालगढ़ पश्चिमी मिदिनापुर का एक गाँव है** जहाँ नवम्बर, 2008 में पुलिस अत्याचारों के खिलाफ प्रचण्ड आन्दोलन किया गया। इस आन्दोलन की जड़ में भी कम्युनिष्ट मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य थे जिनके काफिले पर नवम्बर, 2008 में माओवादियों ने बारूदी सुरंग से हमला किया गया। उस समय वे सालवनी स्थित एक इस्पात संयंत्र की नींव रखकर राम विलास पासवान के साथ वापस लौट रहे थे। ये दोनों तो बाल-बाल बच गये किन्तु इसके बाद हुई गिरफ्तारियों के विरोध में माओवादियों के संरक्षण में **पीपुल्स कमेटी अगेंस्ट पुलिस एट्रोसिटीज (PCAPA)** का गठन हो गया। जिसने एक लम्बे समय से प्रशासन की किसी भी मशीनरी को आसपास के सैकड़ों गाँवों तक फटकने तक नहीं दिया। यहाँ तक कि पुलिस थाने भी अब उनके कब्जे में हैं। गत लोकसभा चुनावों में चुनाव आयोग भी अपने मतदान केन्द्र वहाँ पर बनाने में विफल रहा और इलाके के बाहर ही मतदान केन्द्र बनाकर अपने दायित्व की इतिश्री करनी पड़ी। **पिछले हफ्ते से अब तक दर्जनों माकपा कार्यकर्ताओं की हत्या व अपहरण माओवादी कर चुके हैं।** नवगठित कमांड बटालियंस फॉर रिजाल्यूट एक्शन (कोबरा) की चार इकाइयाँ (जिसकी हर इकाई में 120 के करीब सैन्यकर्मी हैं), सीआरपीएफ की पांच कम्पनियाँ व स्थानीय पुलिस के हजारों जवान सिर्फ पांच सौ प्रशिक्षित माओवादियों के सामने बौने

बने हुए हैं क्योंकि माओवादियों ने न सिर्फ महिलाओं, बच्चों व निरपराध नागरिकों को ढाल बनाकर आगे कर रखा है बल्कि सड़कों व अन्य रास्तों पर पेड़ों के अवरोधक लगाकर सुरक्षाबलों का प्रवेश रोक रखा है। इसके अलावा नंदीग्राम व सिंगूर से हताहत राज्य का कम्युनिस्ट नेतृत्व फूंक-फूंक कर कदम रखने को मजबूर है क्योंकि विधानसभा चुनाव भी चौखट पर हैं।

**बंगाल में जिस माओवादी हिंसा से आज माकपा को जूझना पड़ रहा है वह सही मायने में उसी का बोया हुआ बीज है। माकपा ने उस वर्ग के सामाजिक उत्थान के लिए कुछ नहीं किया जिसके वे हमदर्द होने का दावा करते हैं।** गत तीन दशकों में जिस ताकत के बल पर माकपा ने राज्य के दूरदराज में लाल झंडा फहराया, अब माओवादी उन्हीं की भाषा में जवाब दे रहे हैं। आखिर लाल झण्डे के कारण ही है - लालगढ़ लहलुहान है!

*329, द्वितीय तल, संत नगर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली-110065*

## पाठक विचार सरणि

1. अब 15वीं लोकसभा के लिए चुनाव संपन्न हो चुके हैं और सोनिया गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस सहित संग्रम को पूर्ण बहुमत प्राप्त हो चुका है। भारत की जनता नई सरकार से यह आशा करती है कि सैक्युलरिज्म के सिद्धांत का पालन करते हुए किसी भी पांथिक/समुदाय को वरीयता देकर अथवा किसी पंथ और दूसरे वर्ग को उसके अधिकारों से वंचित न किया जाए ऐसी न्याय पूर्ण नीति देशहित में अपनाए। एक टीस जो भारत के करोड़ों लोगों के हृदय में कई वर्षों से चल रही है कि पाकिस्तान से सटे हुए जम्मू-कश्मीर राज्य में हिन्दू बहुल जम्मू से भेदभाव पूर्ण नीति अपनाई जा रही है।

कश्मीर घाटी का क्षेत्रफल मात्र 15 हजार वर्ग किलोमीटर है जबकि जम्मू प्रांत का क्षेत्रफल 26 हजार वर्ग किलोमीटर है। जनसंख्या की दृष्टि से भी **कश्मीर घाटी की जनसंख्या 50 लाख है जबकि जम्मू की जनसंख्या भी कश्मीर घाटी से अधिक 60 लाख है।** किन्तु फिर भी जम्मू को लोकसभा और विधानसभा में जनसंख्या के अनुपात में उनके हिस्से से कम सीटें दी गई हैं। **जम्मू से संसद के लिए 2 सीट दी गई हैं जबकि जम्मू से छोटे क्षेत्र कश्मीर घाटी से 3 सांसद चुने जाते हैं। विधानसभा में भी जम्मू से 37 विधायक चुने जाते हैं जबकि कश्मीर घाटी से 46 विधायक।** होना यह चाहिए था कि जम्मू रिजन को प्रतिनिधित्व घाटी से अधिक मिले। ऐसा न कर जम्मूवासियों को विवश किया जा रहा है कि उनका विश्वास केन्द्र सरकार से उठ जाए। **जम्मूवासियों के साथ यह एक असंवैधानिक अन्याय चल रहा है।**

इतना ही नहीं आर्थिक दृष्टि से भी केन्द्र से जो अनुदान जम्मू-कश्मीर राज्य को प्राप्त होता है उसका 70 प्रतिशत भाग मुस्लिम बहुल कश्मीर घाटी को दिया जाता है और जम्मू कश्मीर घाटी से कहीं अधिक है और सरकार को जो टैक्स दिए जाते हैं उनमें भी जम्मू क्षेत्र का भाग बहुत अधिक है। इस प्रकार पिछले अनेक वर्षों से जम्मू को पिछड़ने के लिए मजबूर किया जा रहा है। जम्मू की जनता के साथ दशकों से चल रहे इस अन्याय को सरकार दूर करे और जनता का विश्वास प्राप्त करे।

समस्त भारत की देशभक्त जनता का दायित्व है कि जम्मू से हो रहे इस अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाए।

**डॉ. कैलाश चन्द्र**

**333, सुनहरी बाग अपार्टमेंट्स, सेक्टर-13,**

**रोहिणी, नई दिल्ली**

2. सभी समुदायों को समान अधिकार तथा अल्पसंख्यक व बहुसंख्यक का भेद समाप्त करके ही पंथनिरपेक्षता का वास्तविक रूप स्थापित किया जा सकता है।

समाज को पंथ के आधार पर बहुसंख्यकों व अल्पसंख्यकों में विभाजित करके तथ अल्पसंख्यकों को विशेषाधिकार देकर सरकार ने सांप्रदायिकता को बढ़ावा दिया है। सरकार ने अल्पसंख्यक आयोग व मंत्रालय बनाकर भी भेदभाव को और अधिक बढ़ाया है।

राष्ट्र की समस्त जनता को समान अधिकार मिले तो उससे सभी प्रकार की सांप्रदायिकता अपने आप मिट जाएगी, अल्पसंख्यकों को अधिक अधिकार देना तथा 'राष्ट्र के संसाधनों पर पहला हक मुसलमानों' का बताना अपने आप में घोर सांप्रदायिकता का बोध कराता है। **देश के 90 जिलों को मुस्लिम प्रभाव वाले बताकर उन्हें विशेष सुविधा दिलाकर क्या सरकार बहुसंख्यक हिन्दुओं के साथ भेदभाव करके समाज में सांप्रदायिकता का जहर नहीं घोल रही?**

राष्ट्र के पंथनिरपेक्ष स्वरूप को बनाए व बचाए रखने के लिए मेरा सरकार से विनम्र अनुरोध है कि मज़हब आधारित अल्पसंख्यकवाद को समाप्त करना चाहिए और सभी का भारतीयकरण करते हुए समान नागरिक का दर्जा देकर बराबर के अधिकार व दायित्व देने चाहिए।

यह सर्वविदित है कि पार्थिक/सांप्रदायिक भेदभाव के कारण ही सांप्रदायिकता देश के पंथनिरपेक्ष स्वरूप को बिगाड़ रही है, परन्तु लोकतंत्र में वोटों के लालच में एक गलत धारणा बन चली है कि मुस्लिमों को विशेष अधिकार देते चले जाओ और उनकी वोट को लेकर राष्ट्र की सत्ता पाते रहो।

ऐसी स्थिति को सुधारने के लिए सभी लोगों को विचार करना चाहिए।

विनोद कुमार  
नयागंज, गाजियाबाद

## पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम	:	हिन्दुत्व के स्वर : सत्य के दर्पण में
लेखक	:	डॉ. कैलाश चन्द्र
प्रकाशक	:	सांस्कृतिक गौरव संस्थान
मूल्य	:	75 रुपये
पृष्ठ	:	159 पृष्ठ
समीक्षा	:	मोहन जोशी; केंद्रीय मंत्री विहिप

‘हिन्दुत्व के स्वर सत्य के दर्पण में’ पुस्तक में लेखक ने जम्मू कश्मीर, असम तथा समस्त भारत की सामयिक ज्वलंत समस्याओं के बारे में प्रखर राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से अपने विचार प्रकट किए हैं। पुस्तक में हिन्दू इतिहास के गौरवशाली प्रसंगों का मार्मिक ढंग से स्मरण करवाया है। इसके साथ ही वर्तमान शासकों की तुष्टिकरण की नीति, पाकिस्तानपरस्त देशद्रोही तत्वों की घातक मनोवृत्ति एवं केन्द्रीय सरकार की अदूरदर्शितापूर्ण नीतियों से भी समाज को सावधान करने का इस पुस्तक में पूरा ध्यान रखा है। भारत के पड़ोस में काले नाग की तरह से फन फैलाने वाले नेपाल के माओवाद का भी यथार्थ रूप में उल्लेख किया है। संक्षेप में देश की जनता को वर्तमान परिस्थिति में दृढ़तापूर्वक अपनी संस्कृति, धर्म और राष्ट्र की रक्षा के लिए कटिबद्ध होने का आवाहन किया है। आशा है इस पुस्तक के पाठकगण लेखक के विचारों से लाभान्वित होकर अपने कर्तव्य की अनुभूति करते हुए राष्ट्रहित में महत्वपूर्ण योगदान करेंगे। लेखक का यह प्रयास प्रशंसनीय है। ऐसी मूल्यवान् पुस्तक लिखने के लिए लेखक को हार्दिक साधुवाद।

# INDIAN IDENTITY AND CULTURAL CONTINUITY

-Kireet Joshi

The history of India is so long and complex and the continuity of Indian culture so enigmatic and astonishing that it is difficult to bring out in a brief compass those quintessential elements which distinguish India's identity and the real secret of her continuity through millennia. To many, who are not acquainted with Indian modes of life and thought feel so baffled that they might even declare that there is no such thing that one can trace from the confusing multiplicity and variety any single central thread by means of which Indianness can be understood or defined. To them, India still seems to be somewhat primitive which places together polytheism, monotheism, monism and nihilism, or else allows itself to be a field of battle between various conflicting philosophies, sharply criticising each other, and yet forgetful of the differences and compromising with a curious sense of tolerance, or to allow itself to be a perplexing scenario of endless castes and classes, lumping them all together in a framework that is neither capitalistic nor socialistic and yet sharing virtues of neither but vices of both. To them, it seems strange and inexplicable as to how India has managed to survive through vicissitudes of tides and ebbs and how, in recent history in which the degeneration became extremely marked, she has been able to rise with some kind of rapidity and even surprising boldness in a mood that can challenge the great, rationalistic, scientific, progressive and well-structured modernity of the West.

But all this enigma can be more easily cleared up if we can go back to the Vedas and try to understand that these records of ancient people contain not only wisdom but also quest of knowledge that had borne fruits in the form of great discoveries of the psychological being and had even attained lofty levels of perfection. For the Vedic seers were discoverers and they had discovered not only the triple world of matter, life and mind but, as the Angirasa's legend tells us, they had even opened the gates of the fourth world *turiyam svid* and found there the key to divine perfection. They had discovered oneness and multiplicity and found the wideness in which varieties of experience can find their culmination in a rich harmony and unity. What we call Indianness was shaped by the Vedic quest, and this quest arrived at an affirmation that:

(1) beyond the body, life and mind, there is a spirit, — vast, universal and transcendental which can be attained and realised and in realising which one finds oneself liberated in peace and delight that cannot be diminished or annihilated; and (2) that this realisation can come, — not by neglecting body, life and mind, but only when these powers or at least some of them are greatly developed, cultivated, sharpened and perfected.

The Vedic quest also provided another element of Indian-ness, and that is its insistence on *r,ta*, the law of life and the law of development of individual and of the collectivity, a law which is, in a sense, eternal or the *sanatana*, and which is yet so supple that for each stage of life, each epoch of time, each nation, each collectivity and each individual it provides its own specific rhythms that govern their specific and unique development of life. This is what has come to be developed in due course as "*sanatana dharma, yuga dharma, rashtra dharma, kula dharma*", and even *swadharm*. The profundity and depth of the concept of dharma, which is not religion, but which is a complex principle of guidance that can lead individuals and collectivities from lower levels to higher levels, and which in reaching culminations widens itself into freedom to the infinity of the spirit.

Another element that the Vedic quest provided to the Indian identity was that what is important in the human quest is not specific doctrine or thought-formulation but the search for or an orientation towards the highest which can be experienced, realised, and verified, repeated and made permanent. This is what explains how the Indian consciousness can permit various thought-formulations and philosophies and religions, and yet maintain the spirit of mutual understanding, synthesis and even comprehensiveness in which contraries can meet and confess to each other their uniqueness, limitations and needs for all and the totality.

Finally, a further great element of Indianness was the highest aspirations that insisted on reaching social, political, economic and collective perfection that can be measured in terms of togetherness of people, upliftment of all, and widest embrace of the universal brotherhood. We still hear the last hymn of the *Rigveda, samgacchadwam samvadadhvam* and we feel unfailingly that this call of the Veda defines best the Indian identity.

It is remarkable that these essential elements of Indian-ness have inspired the complex structure of Indian religion and spirituality, Indian philosophy and ethics, Indian sociology and polity, Indian art and literature, — indeed, every aspect of Indian life. In every field of culture great and noble ideals have been erected, and even the practical applications have been quite effective, and even when there have been failures and periods of decline, there have been sudden revivals and creations of new institutions and forms which have not hurt the fundamental continuity. Indian psychology is profound and its receptivity of external influences has been so sympathetic that by some kind of alchemy of identification the best of the foreign has been received and assimilated. The secret of India's continuity can be traced to the original reservoirs of ancient wisdom, to renew itself, to advance further and create novelties that are not entirely novel.

India is today at a critical stage where external influences are rushing from various directions with great speed, attractiveness and power. It is even feared that these influences might penetrate so victoriously that they might , succeed in wiping out Indianness of India and may bring about a rupture in the continuity of its culture. Some, indeed, believe that India will be greatly profited if these influences succeed, since India will be renewed, it will become modernised and will be able to sit with pride in the company of the modern and developed countries.

But those who understand the depth and the truth of India cannot feel reconciled that this attitude, — particularly, when the progressive and developed countries of the world themselves are increasingly experiencing in their life the strangulating effects of uncontrollable mechanisation, depersonalisation and dehumanisation and are now looking for the liberating wisdom and knowledge which India possesses in its depth, even though in its outer life, it is, in many ways, in a state of degeneration and agony. We have, therefore, to look at this problem very closely so as to dwell upon this very important subject of Indianness and cultural continuity of India.

Let us, first of all, emphasise the fact that as we look deeply into the new consciousness that is fundamentally vibrating among the children and the youth, is manifesting itself through flashes of their amazing talents, genius and dexterity, we find that there is a sound basis to feel confident that the present stage of degeneration in our country can be reversed and remedied. We have, however, to stress that we have to create conditions under which that new consciousness is allowed to be liberated from the clutches of ignorance and imprisoning modes of social structures and uninspiring ideals that are constantly being bombarded on the minds of the youths. Let us also admit that while recovering the ancient wisdom, we must stress the need for new creation. What has been golden in India's past is so refashioned and chiselled that it can bear the burden of a new quest and a new accomplishment.

The country needs a new polity and a new economy, but not imitative of foreign polity and foreign economy; for our goal will be to uphold all and serve and glorify *all* the millions of souls of our country. The secret of this upliftment of all is not visible in any current political or economic philosophy or practice. We have to realise that there is something precious in our own national genius that can absorb all that was precious in India's antiquity and in the western modernity and yet develop something fresh and new. We need to develop new philosophies and new forms of critical knowledge; but we do not need to imitate western philosophy and western criticism; we can assimilate all of them, but we have to go still farther, and that can come only when we understand the essential soul of ourselves. Let us at the same time declare that not everything that is foreign is necessarily injurious. The western ideals of progress, — those of liberty, equality and fraternity, — if received rightly and assimilated properly, can ensure the rejuvenation of our individual and collective life. The west can teach us secrets of modern science, and if we can learn these lessons rightly but in accordance with Indian spirit, we can recover and even refashion our own national intellectual, moral, and spiritual resources and capacity. The message of individual freedom, productivity and prosperity flowing upon us from the West, if received rightly, can help us in developing among us not only the most needed work ethos but also enable us to apply the secrets of the Yoga of works and stimulate a new Yogic research which may lead us out of the bewildering egoistic dynamics of life that has brought us to a great crisis.

Let us, however, not be overwhelmed by a number of those ideas that are coming upon us which imply some kind of economic barbarism. Let us not fall prey to the invasion of vulgar sensuality; and let us not ape those life styles, which are injurious to our body, mind and soul. Our own culture has a great deal to teach us in regard to sacredness of human relationships. India can tell us how stability and dynamism of life

can be blended harmoniously; India can also counsel us that the spirit of sacrifice is much greater than the seeking of all that is merely pleasant. Long ago, we were told to chose *shreyas* rather than *preyas*, and this ancient prescription needs to be heard by us with great attention and earnestness. India had discovered long ago how to liberate ourselves from egoism and yet not lose but rather greaten our capacities for dynamic action. We need to receive that knowledge once again and make it active in the present difficult conditions of modern collective life. We do not need to worship selfish self-centredness and narrow competitiveness in self-assertion. India has been constantly teaching that the world is vast and that everybody has a place in it which, one can have, if only takes pains to discover one's own capacities, inner nature and soul.

The task is great and difficult, but living in difficult days we have only to accept heavy and onerous responsibilities. Hence, we need not fear but aspire; for during the last hundred years and more much has been done and achieved, — not by the so-called leaders of political and economic life, — but by those who have had the courage to scale once again the ancient heights of the spirit and develop the vision that can look into the far distant future. By the aid of the heritage that we can receive from them, we can confidently move forward. We can reaffirm India's Indianness, we can change, even radically change, and yet we can maintain the cultural continuity without any disabling rupture.

**Sri Aurobindo has given an inspiring message for the renascent of India in the following words:**

India of the ages is not dead nor has she spoken her last creative word; she lives and has still something to do for herself and the human peoples. And that which must seek now to awake is not an anglicised oriental people, docile pupil of the West and doomed to repeat the cycles of the occident's success and failure, but still the ancient immeasurable *Shakti* recovering her deepest self, lifting her head higher towards the supreme source of light and strength and turning to discover the complete meaning and a vaster form of her Dharma<sup>1</sup>.

<sup>1</sup> Sri Aurobindo: The Foundation of Indian Culture, Volume 14, Centenary Edition, p. 381 8

## **Text Book Politics in Pakistan**

**-Arif Mohammed Khan**

The empowerment of terror in Pakistan has not happened overnight. This is the logical culmination of the politics and policies pursued by Pakistan for years now. Terrorism in Pakistan has its roots in the culture of hate and the ethos of inequality on the ground of religious faith, leading to their being deeply ingrained in the Pakistani psyche and mindset.

One factor that has played a crucial role in creating this culture of hate is the educational policy of the government of Pakistan pursued since 1977. The officially prescribed textbooks, especially for school students, are full of references that promote hate against India in general, and Hindus in particular.

A cursory glance at Pakistani school textbooks - especially the compulsory subjects like Pakistan studies and social studies - gives an idea of how history has been distorted and a garbled version prescribed to build this mindset and attitude.

The objective of Pakistan's education policy has been defined thus in the preface to a Class 6 book: "Social studies have been given special importance in educational policy so that Pakistan's basic ideology assumes the shape of a way of life, its practical enforcement is assured, the concept of social uniformity adopts a practical form and the whole personality of the individual is developed." This statement leaves no doubt that "social uniformity", not national unity, is a part of Pakistan's basic ideology.

The Class 5 book has this original discovery about Hindu help to bring British rule to India: "The British had the objective to take over India and to achieve this, they made Hindus join them and Hindus were very glad to side with the British. After capturing the subcontinent, the British began on the one hand the loot of all things produced in this area, and on the other, in conjunction with Hindus, to greatly suppress the Muslims."

The book for class 8 says, "Their (Muslim saints) teachings dispelled many superstitions of the Hindus and reformed their bad practices. Thereby Hindu religion of the olden times came to an end."

On Indo-Pak wars, the books give detailed descriptions and openly eulogize 'jihad' and 'shahadat' and urge students to become 'mujahids' and martyrs and leave no room for future friendship and cordial relations with India.

The Class 5 book says : **“In 1965, the Pakistani army conquered several areas of India, and when India was on the point of being defeated, she requested the United Nations to arrange a ceasefire. After 1965, India, with the help of Hindus living in East Pakistan, instigated the people living there against the people of West Pakistan, and finally invaded East Pakistan in December 1971. The conspiracy resulted in the separation of East Pakistan from us. All of us should receive military training and be prepared to fight the enemy.”** The book prescribed for higher secondary students makes no mention of the uprising in East Pakistan in 1971 or the surrender by more than 90,000 Pakistani soldiers. Instead, it claims, **“In the 1971 India-Pakistan war, the Pakistan armed forces created new records of bravery and the Indian forces were defeated everywhere.”**

The students of Class 3 are taught that **“Muhammad Ali (Jinnah) felt that Hindus wanted to make Muslims their slaves and since he hated slavery, he left the Congress”**. At another place it says, **“The Congress was actually a party of Hindus. Muslims felt that after getting freedom, Hindus would make them their slaves.”** And this great historic discovery is taught to Std V students, **“Previously, India was part of Pakistan.”**

Commenting on this literature that spreads hate, leading Pakistani educationist Tariq Rahman wrote, **“It is a fact that the textbooks cannot mention Hindus without calling them cunning, scheming, deceptive or something equally insulting. Students are taught and made to believe that Pakistan needs strong and aggressive policies against India or else Pakistan will be annihilated by it.”**

*(The author is a former Union minister)  
Courtesy : TOI, New Delhi, 27 Dec. 2008*

## **Saudi Textbooks Incite Hatred & Violence against non-Muslims**

***-Dr. Sami Alrabaa***

Ahmed Al-Sarraf cited in Al-Qabas (June 2, 2007) some passages from a Kuwaiti school textbook taught at the first secondary grade. Here is an English translation of passages from the book, "Jurisprudence", page 38:

### **Who is, or who is not, punished in a Muslim society:**

- \* A Muslim who kills an apostate or someone who commits adultery against an infidel is not punished.
- \* If a Muslim kills an infidel or a slave, he is not punished.
- \* If a Muslim man, father, or grandfather kills someone from his offspring, he is not punished.

I went through school textbooks taught in Saudi Arabia and Indonesia. Here is an English translation of some passages from these books.

### **A fourth grade textbook on Monotheism and Religion instructs students:**

"Any other religion other than Islam is invalid (false)."

(P. 29 )

"Hate (yakrah) the polytheists and the infidels" as a requirement of "true faith." (P. 86)

### **5th Grade. Book: Monotheism and Religion:**

- \* "Every religion other than Islam is invalid." (P. 33)

\* "It is not permitted to be a loyal to non-Muslims, and to those who oppose God and His Prophet." (P. 14)

\*"Whoever obeys the Prophet and accepts the oneness of God cannot be loyal to those who oppose God and His Prophet, even if they are his closest relatives." (P. 71)

\*"A Muslim, even if he lives far away, is your brother in religion. Someone who opposes God, even if he is your brother by family tie, is your enemy in religion." (P. 73)

\*"Just as Muslims were successful in the past when they came together in a sincere endeavor to evict the Christian crusaders from Palestine, so will the Arabs and Muslims emerge victorious, God willing, against the Jews and their allies if they stand together and fight a true *jihād* for God, for this is within God's power." (P. 75)

\*"Jews are the people of the Sabbath, whose young people God turned into apes, and whose old people God turned into swine to punish them." "As cited in Ibn Abbas: The apes are Jews, the keepers of the Sabbath; while the swine are the Christian infidels of the communion of Jesus." (P. 83)

\*"The clash between our [Muslim] community (umma) and the Jews and Christians has endured, and it will continue as long as God wills. In this *hadith*, Muhammad gives us an example of the battle between the Muslims and the Jews." (P. 113)

\*"Narrated by Abu Hurayrah: The Prophet said, the hour [of judgment] will not come until the Muslims fight the Jews and kill them. [It will not come] until the Jew hides behind rocks and trees. [It will not come] until the rocks or the trees say, 'O Muslim! O servant of God! There is a Jew behind me. Come and kill him.'" (P. 114)

\*"Muslims will triumph because they are right. He who is right is always victorious, even if most people are against him." (P. 117)

"A woman who shows in public any part of her body except that of her eyes will be punished by hellfire by almighty Allah." (P. 194)

"The infidels have established Christian hospitals and clinics and send medics all over the world. As one of the Christianizers said, 'Where you find people, you find pain. And where there's pain, there's a need for a doctor. And where there's a need for a doctor, there's an appropriate opportunity for missionary activity [Christianization].'" (P. 163)

"The infidels have founded many schools and universities in the Muslim world at various educational levels. These include: the American Universities of Beirut and Cairo, the Jesuit University, Robert College in Istanbul, Gordon [Memorial] College in Khartoum, and others too numerous to mention. (P. 186)

### **Teacher's Manual:**

#### **Grade 5:**

Teach that after their death, non-Muslims will be sent to hell. (P. 30)

Quiz: Is it permissible to love the Jews and Christians? Of course no. Explain why. (P. 15)

#### **Grade 8:**

\*Command Muslims to "hate" Christians, Jews, polytheists and other "unbelievers," including non-devout Muslims." (P. 14)

\*Teach that the Crusades never ended, and identify the American Universities in Beirut and in Cairo, other Western and Christian social service providers, media outlets, centers for academic studies of Orientalism, and campaigns for women's rights as part of the modern phase of the Crusades. (P. 15)

\*Teach that "the Jews and the Christians are enemies of the [Muslim] believers" (P. 16) and that "the clash between the two realms "continues until the Day of Resurrection." (P. 18)

\*Instruct students not to "greet," "befriend," "imitate," "show loyalty to," "be courteous to", or "respect" non-believers. (P. 24)

#### **Grade 9:**

\*Define jihad to include “wrestling with the infidels by calling them to the faith and battling against them,” (P. 25) and assert that the spread of Islam through *jihad* is a “religious obligation.” (P. 26) [the word qital, translated here as “battle,” is derived from the verb qatala, “to kill,” and is virtually never used metaphorically.]

\*Instruct that “the struggle between Muslims and Jews” will continue “until the hour [of judgment]” and that “Muslims will triumph because they are right” and “he who is right is always victorious.” (P. 27)

#### **Grade 10:**

\*Cite a selective teaching of violence against Jews, while in the same lesson, ignoring the passages of the *Quran* and *hadeeths* [narratives of the life of the Prophet, Peace be upon Him, that counsel tolerance. (P. 28)

\*Teach the Protocols of the Elders of Zion as historical fact and relate modern events to it. (P. 29)

\*Discuss Jews in violent terms, blaming them for virtually all the “subversion” and wars of the modern world. (P. 30)

\*\*Give examples of false religions, like Judaism, Christianity, Paganism, etc.” (P. 66)

\*\*Explain that when someone dies outside of Islam, hellfire is his fate.” (P. 67)

By the way, over 20 Saudi schools, each chaired by the local ambassador from Saudi Arabia, are located throughout the world, in Bonn, Berlin, Washington, Algiers, Ankara, Beijing, Djibouti, Islamabad, Istanbul, Jakarta, Karachi, Kuala Lumpur, London, Madrid, Moscow, Paris, Rabat, Rome, and Tunis.

In fact, you can find some of the above stuff in many school textbooks in all the Arab Gulf countries, Egypt, Kuwait, The United Arab Emirates, Qatar, and Jordan. Fourteen-year-old boys’ and girls’ brains are stuffed with intolerance, animosity towards other religions and their followers.

Al Sarraf wonders, what is the point in devoting \$150 million of Kuwaiti money to spend on disseminating tolerance and moderation in society when the foundation of society, the youth, are taught religious fanaticism and religio-centricism? Islam is a tolerant and moderate religion, but some zealous Muslims have hijacked it and are determined to interpret it their own way.

I disagree with Al Sarraf over the last point. Islam is partially tolerant and moderate. When you check out the *Koran* and *Hadeeth* (the prophet Muhammad’s comments), you find out that Islam is also a violent faith. It preaches hatred and violence against non-Muslims and discriminates against women. (Check out “Is Islam a Violent Faith?”).

#### **What does all that imply in terms of the war on terror?**

The war on Islamic terror will remain futile unless the free world forces Saudi Arabia and the other Arab oil countries on the Persian Gulf to remove hatred and violence from their school textbooks. The root causes of Islamic terror must be rooted out. This is not an internal issue and has nothing to do with freedom of speech. It impacts all of us and the world peace at large. The West must use all its leverage vis-à-vis these states to achieve this goal if it truly wants to gain in the war on terror.

I’m also pretty sure that the more and more Muslims around the world who read the Koran thoroughly, many more of them would turn their back to Islam. According to a recent survey by Berlin University, 13% of male Muslims have read the Koran and among women it is only 7%.

Many Muslims around the globe, in particular non-Arabs, do not understand the Koran which is written in an old archaic Arabic. They learn about Islam from what their fanatic *imams* preach.

-----  
**Dr. Sami Alrabaa, an ex-Muslim, is a sociology professor and an Arab/Muslim culture specialist. Before moving to Germany he taught at Kuwait University, King Saud University, and Michigan State University.**

## Pieces of the Persian puzzle

### *-Ramin Jahanbegloo*

The massive public demonstrations of the past week in Iran, unprecedented since the revolution thirty years ago, have been seen as a battle between the supporters of Mir Hossein Moussavi, the reformist challenger and the incumbent president, Mahmoud Ahmadinejad. Yet the current upheaval is about a much deeper struggle taking place in the corridors of power in Tehran and it is likely to bring about a major transformation of the Islamic Republic. Certainly a lot depends on the future moves of the political-religious-military-security leadership who control the levers of state violence, but what seems evident as the crisis deepens is that a whole series of ideological beliefs and political institutions inherited from the revolution of 1979 are now put into question.

Among these, we find the cherished belief that the Islamic revolution removed tyranny and established a system of social justice. Actually, the regime's conduct in the past one week has presented serious challenges to its own political institutions while undermining its republican principles by granting no legitimacy to the judgment of the Iranian public sphere.

More generally, regardless of whether there was significant fraud in the presidential elections, those among the architects of the political establishment who believed that the system allowed scope of reform and change find themselves face-to-face with an authoritarian structure that uses extreme violence to ensure its political survival.

Though the pre-reform clerics such as moderate former president Mohammad Khatami have increasingly warned Iran's conservative leadership of "dangerous consequences" if people were prevented from expressing their demands in non-violent ways, the Supreme Leader, Ayatollah Khamenei, argued that to make concessions to popular demands and "illegal" pressure would amount to a form of "dictatorship" and warned the protestors that they, rather than the police, would be held responsible for any further violence.

By clearly coming out in support of the conservative camp and acknowledging the fact that his views on foreign and domestic policy were closer to those of Ahmadinejad than to those of the president's foes and critics, although historically his role is to remain an arbiter and above factionalism, Ayatollah Khamenei has jeopardised his political and spiritual legitimacy and the regime's armour of invincibility, which are so central to the regime's authoritarian control. One needs also to add that none of the quietest clerics in Qom came forward to endorse either the election results or Ayatollah Khamenei's famous speech.

In other words, the fissure appears to be expressing itself not only between the Iranian state and the young civil society, but also between the Supreme Leader and the Grand Ayatollahs in Qom.

Rafsanjani's opposition to Ahmadinejad has also raised speculation of possible rifts emerging in the ruling theocracy over the election. Rafsanjani heads the Assembly of Experts, a panel of clerics with the power to review the Supreme Leader's performance and remove him — although that has never been used.

Therefore, that the elections might or might not have been rigged is now a completely irrelevant question. During the past few days the unarmed and peaceful Iranians across all ages and classes have flocked to the streets of Tehran, defying brutal paramilitary squads, to demand major transformations in the structure of the political establishment in Iran. With such a complex landscape and fast-moving developments on the ground, Iran's political future has become even more obscure and uncertain than its immediate past.

That said, an equally important fact is that most of the young demonstrators who have been questioning the legitimacy of Iran's electoral process and now the credibility of the Iranian political institutions, are not, unlike their parents, interested in revolutionary upheaval or violent change. Some could be prepared to take their protests to the limit. Many others, however, have no interest in an all-out mutiny against the country's Islamic system. The protest movement, however, has appeared to gain some solid footing after days of street clashes that left different cities of Iran scorched and battered. There is common agreement among the demonstrators and civil activists that the main contradiction in contemporary Iran is the one between authoritarian violence and democratic non-violence. In the days and weeks ahead, we will have to wait and

see how this dialectic between the powerless non-violent truth-seekers and powerful lie-makers and users of violence will work itself out.

The greatest degree of uncertainty surrounds a scenario in which the military elite conclude that the mass protests reflect deep-seated discontent and that a Tiananmen moment is necessary. Needless to say that Iran is incapable of following China's path. Twenty years after Tiananmen, the Chinese Communist Party has increased its popularity through delivering staggering economic growth and cultivating a revived Chinese nationalism. If Ahmadinejad remains in power as the president, he has to address the budget deficit brought about by plummeting oil prices and the world financial crisis and justify his administration's use of violence against those of his compatriots that he called "dust and dirt". Should street violence escalate in Iran, it also spells a turning point in Iran's domestic and foreign policies that the world will not forget or forgive. In short, no one can yet predict Iran's political future, but one thing is crystal clear. Even if the Iranian political establishment outlasts the current upheavals, unrests all over the country will play out over months and years to come. The Iranian system would settle down uncomfortably as a divided house. As such, even if authorities in Tehran undermine the popular and republican elements of the Iranian constitution, this would only increase their vulnerability to future democratic demands and to a legitimacy crisis that is hanging over their heads. In short, no one can yet predict Iran's political future, but two things seem clear. First, the crisis in Iran is an Iranian crisis and can only be solved by Iranians. But, second, there is no need to conceal the fact that that popular unrest in Iran has created a critical change to the security and stability of the region.

*The writer, former head of the Contemporary Philosophy Department of the Cultural Research Centre in Tehran, has written more than 20 books including 'Iran: Between Tradition and Modernity' and 'India Revisited: Conversations on Contemporary India'*

*Courtesy: The Indian Express, New Delhi, June 6, 2009*

## **We Are All Hindus Now**

**-Lisa Miller**

America is not a Christian nation. We are, it is true, a nation founded by Christians, and according to a 2008 survey, 76 percent of us continue to identify as Christian (still, that's the lowest percentage in American history). Of course, we are not a Hindu—or Muslim, or Jewish, or Wiccan—nation, either. A million-plus Hindus live in the United States, a fraction of the billion who live on Earth. But recent poll data show that conceptually, at least, we are slowly becoming more like Hindus and less like traditional Christians in the ways we think about God, our selves, each other, and eternity.

The Rig Veda, the most ancient Hindu scripture, says this: "Truth is One, but the sages speak of it by many names." A Hindu believes there are many paths to God. Jesus is one way, the Qur'an is another, yoga practice is a third. None is better than any other; all are equal. The most traditional, conservative Christians have not been taught to think like this. They learn in Sunday school that their religion is true, and others are false. Jesus said, "I am the way, the truth, and the life. No one comes to the father except through me."

Americans are no longer buying it. According to a 2008 Pew Forum survey, 65 percent of us believe that "many religions can lead to eternal life"—including 37 percent of white evangelicals, the

group most likely to believe that salvation is theirs alone. Also, the number of people who seek spiritual truth outside church is growing. Thirty percent of Americans call themselves “spiritual, not religious,” according to a 2009 NEWSWEEK Poll, up from 24 percent in 2005. Stephen Prothero, religion professor at Boston University, has long framed the American propensity for “the divine-deli-cafeteria religion” as “very much in the spirit of Hinduism. You’re not picking and choosing from different religions, because they’re all the same,” he says. “It isn’t about orthodoxy. It’s about whatever works. If going to yoga works, great—and if going to Catholic mass works, great. And if going to Catholic mass plus the yoga plus the Buddhist retreat works, that’s great, too.”

Then there’s the question of what happens when you die. Christians traditionally believe that bodies and souls are sacred, that together they comprise the “self,” and that at the end of time they will be reunited in the Resurrection. You need both, in other words, and you need them forever. Hindus believe no such thing. At death, the body burns on a pyre, while the spirit—where identity resides—escapes. In reincarnation, central to Hinduism, selves come back to earth again and again in different bodies. So here is another way in which Americans are becoming more Hindu: 24 percent of Americans say they believe in reincarnation, according to a 2008 Harris poll. So agnostic are we about the ultimate fates of our bodies that we’re burning them—like Hindus—after death. More than a third of Americans now choose cremation, according to the Cremation Association of North America, up from 6 percent in 1975. “I do think the more spiritual role of religion tends to deemphasize some of the more starkly literal interpretations of the Resurrection,” agrees Diana Eck, professor of comparative religion at Harvard. So let us all say “**om**.”

*Courtesy: NEWS WEEK. Aug, 2009 issue.*

## **THE ESSENCE OF RAM RAJYA CONCEPT**

**Ram Rajya** - They say cannot be replicated after thousands of years but you see below and judge if any item is not relevant to present day social & political scenario. It is much better to call it Ram Rajya which goes well with our Bhartiya ethos. The idiom of political communication needs to change for the sake of national development.

**“Rama se bada Rama ka Naam” - Sant Tulasidas**

*Harmony, Peace and happiness are major components of the concept of Rama rajya.*

### **The Search for Happiness**

1. Rama Rajya evokes all that is desirable from a citizen’s viewpoint. This is the highest common factor and the single constant theme that unites all human beings of all colours and faiths. “If, at the end of a plan period, our people are not happier than they were before, we should know that our plans have failed” - King of Bhutan

### **Foundations of Gross National Happiness**

- **Security** Of all the levels of security, national security is the most paramount.
- **Peace.** Peace is the primary condition for the happiness – personal, national, universal.
- **Harmony.** Citizens living in harmony with each other give energy and power to the society and the state.

- **Nature-Human Covenant.** We depend upon nature for life-sustaining air, water, food, and shelter. Preservation and conservation of nature should be our motto.
- **Cultural Frame.** Culture is the deposit of knowledge, experiences, beliefs, faith, acquired by a large group of people over generations. Faith and a strong cultural system can sustain Human beings under the most difficult circumstances.
- **Needs and Wants.** Human beings may not live by bread alone, but without bread, they will not live at all. People living on the fringes of mainstream economic life can hardly think of happiness.
- **Institutional Standards.**
- o **Good Governance** acts as an instrument to set standards and promote gross national happiness and flowering of the genius of the citizens— economic, social, political, scientific, cultural, ethical.
- o **Moral Literacy.** The level of moral standards and uprightness across the system could be a more authentic indicator of the health of the society.
- o **Rights without responsibilities!** The greatest strength of a nation comes from the strength of the character and integrity of its citizens.

## **Indus script may soon give up its secrets**

*-Chetan Chauhan*

Indian and American researchers are close to breaking the code behind the script of the Indus Valley civilisation, which flourished on the India-Pakistan border 4,000 years ago. The script, found as inscriptions on numerous objects dating from that period, has puzzled archaeologists ever since Harappa was discovered in 1842.

A study, a joint effort of Mumbai's Tata Institute of Fundamental Research, Chennai's Institute of Mathematical Sciences and the University of Washington, was published this week in Proceedings of the National Academy of Sciences. It says there are distinct patterns in the hieroglyphics used by the script, and creates a statistical model for the unknown language. "The model provides insights into the underlying grammatical structure of the script," said lead author Rajesh Rao, associate professor of computer science, University of Washington.

Western archaeologists have often sought to debunk the claim that the symbols comprised a script at all. While scholar Natwar Jha, in his book on Indus Valley in 2000, claimed the inscriptions found on the artefacts were a form of Vedic Sanskrit, others have maintained it was some kind of Dravidian language. Rao, however, said calculations with the help of computers and mathematical models had shown that the order of the symbols on the artefacts was meaningful for the discovery of an unknown script representing a distinct language.

*Courtesy: H.T. New Delhi*

## **10 Years ago, Thakur Ram Singh on the essence of History**

**94 years old Thakur Ram Singh ji spoke to a staff reporter of the Indian Nation - thus.**

Akhil Bharatiya Itihas Sankalan Yojana has taken upon itself the responsibility of removing the distortion of Indian history incorporated deliberately by foreign scholars and invaders by undertaking fresh researches, archeological excavations and a scientific pursuit of the truth.

Talking to reporters Prof. Thakur Ram Singh, the president of the Yojna, said the history of India could not be written relying on the Christian calendar, which is only '1999 years' old. As against this, the Indian history, he claimed is 197 crore years old, from the time when the universe (Brahmand) came into being.

Prof. Singh contended that a common distortion of history is the theory that Aryans were outsiders. Aryans were very much original residents of India. The Yojna is also working on how and why the river Saraswati dried up. This is of special significance since the Vedas were created on the banks of Saraswati river, Prof. Singh asserted.

## **Diary of Events**

**April 1** Jamiat Ulama-i-Hind and Baba Ramdev spoke in one voice on senior BJP leader LK Advani's demand that the Government should take steps to bring back tainted money stashed away by the Indians in Swiss banks. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

\_\_\_\_\_ Expressing confidence that the Rashtriya Swayemsewak Sangh (RSS) would go from strength to strength in the coming years, the newly elevated *Sarsanghchalak* of Hindu cultural body Mohan

Bhagwat said, "We are not worried about criticism as those who criticize us are motivated by selfish gains." *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

\_\_\_\_\_ Baba Ramdev was quoted by news agencies as advising all political parties to come together on the issue of black money. He said people should vote for the party which promises to bring back black money to the country. *The Times of India, New Delhi, p. 16.*

\_\_\_\_\_ Dreaded gangster Chhota Shakeel had ordered the elimination of Varun Gandhi the day he was to surrender at a Pilibhit court. The Intelligence Bureau had intercepted a telephonic communication from the Karachi-based don. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

\_\_\_\_\_ West Bengal Government refused to comply with its "Tughlaqan directive". According to reports, the commission asked the Government to remove the portraits of Netaji Subhas Chandra Bose, Rabindranath Tagore and revolutionary figures like Kshudiram Bose. Benoy, Badal and Dinesh. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

**April 3** The Himachal Pradesh unit of Rashtriya Swayamsewak Sangh (RSS) started its three-day meeting. The meeting is being held at a local private college located on the Hamirpur-Dharamshala national highway. New RSS chief Mohan Bhawgwat is also attending the meeting. He will also visit Neri village to take part in the meeting of the history re-writing samiti of the organization. It will be first visit of the new RSS chief to Himachal Pradesh after taking over the new responsibility. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

\_\_\_\_\_ Human rights groups and some Afghan lawmakers criticized President Hamid Karzai for signing into law legislation that some believe legalizes the rape of a wife by her husband and prevents women from leaving the house without a man's permission. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

\_\_\_\_\_ From the cloudy mountains of Mizoram's capital Aizawl, Congress' star campaigner Rahul Gandhi drew the line between the congress' and the Opposition's idea of what is Indian and Indian ness. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

**April 4** New Delhi: BJP has placed its Hindutva issues like a Ram temple at Ayodhya, uniform civil code and Article 370 in its manifesto but has chosen to considerably de-emphasise them by passing over them with brief mentions which do not spell out specific plans of action. Even the muted references did not prevent Bihar CM Nitish Kumar from pointing out that these issues were BJP's own agenda and not of the NDA. *The Times of India, New Delhi, p. 10.*

\_\_\_\_\_ New Delhi: Taking forward what it has conceived when in government during 1999-2004, the BJP has promised to provide an improved version of the multipurpose national identity cards (MNIC)-comprising all personal details of citizens-to all Indians within three years, if comes to power. *The Times of India, New Delhi, p. 10.*

\_\_\_\_\_ To vote, says the Baba, "Is one of the ways to cleanse Indian politics of undesirable elements." He wont' tell them who to vote for, but urges them to use their judgment and vote for the cleanest candidate in the running. *The Times of India, New Delhi, p. 11.*

**April 5** The newly elected general secretary of the Rashtriya Swayamsevak Sangh (RSS) Bhaiyaji Joshi has come out in the open in support of Varun Gandhi, detained under the National Security Act (NSA) by the Mayawati Government, indicating that the RSS-BJP would go the whole hog to fight Varun's detention. *The Indian Express, New Delhi, p. 4.*

\_\_\_\_\_ After many years of fervent lobbying and deal-making in China, American media companies have little to show for their efforts there and are increasingly shifting their attention instead to India. *The Hindsutan Times, New Delhi, p. 18.*

**April 7** A leading counter-terrorism expert and an adviser to the current United States administration said on Monday that Pakistan is on the verge of internal collapse within six months. David Kilcullen was quoted by *The New York Times* as saying thus in a news analysis on how the US is losing time in pressuring Pakistan into defeating the insurgency. *The Mail Today, New Delhi, p. 1. & 4.*

\_\_\_\_\_ Lalu Prasad came up with his own aggressive posturing in the minority-dominated Kishanganj constituency. "Had I been the Home Minister, I would have crushed Varun Gandhi under a roller and

destroyed him without caring for the consequences... for his hate speech against Muslims.” *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

\_\_\_\_\_ After complaining against Prime Minister Manmohan Singh’s visit to Arunachal Pradesh, China is now learnt to have objected to President Pratibha Patil’s tour of the state last week that included a visit to Tawang. *The Indian Express, New Delhi, p. 7.*

**April 8** RSS *Sarsanghchalak* Mohan ji Bhagwat said that the forthcoming election should be fought on national issues like terrorism and national security and the Ram Mandir issue should be among these. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

\_\_\_\_\_ BJP national president Rajnath Singh said that if voted to power the Government would initiate a process where the Indian Army started a joint operation with Pakistan to dismantle terror network operating in that country. *The Pioneer, New Delhi, p. 11.*

\_\_\_\_\_ The RSS chief Mohan Bhagwat said Hindutva was the “identity” of the country and asked the people to be proud of it. “Our identity is Hindutva and the people should be proud of it. Society should work for removal of evils and its welfare. *The Indian Express, New Delhi, p. 5.*

**April 9** More than a dozen Hindu social and religious organizations floated the Hindu Raksha Manch to fight ‘pseudo secular’ and ‘anti-Hindu forces’ and uphold the esteem of Bharat Mata. The Manch has also been formed to “prevent a split in Hindu votes”. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

\_\_\_\_\_ Pakistan’s Science and Technology Minister Azam Khan Swati has said US policies aim to dismantle Pakistan, neutralize Iran and contain China to make India a regional superpower to achieve her objectives. He further said NATO’s presence in the region was a great threat to the very existence of Afghanistan, Pakistan, China and Iran as well. *The Tribune, New Delhi, p. 13.*

\_\_\_\_\_ A handbook being circulated among the priests of Syro-Malabar Church of Kerala has put forward the need of the priests to get involved in active politics. ‘Politics is not untouchable for the Church,’ says the handbook. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

\_\_\_\_\_ Notorious Quote - “Had I been the Home Minister of the country, I would have run a roller on Varun Gandhi for his remarks offending the feelings of 17 crore Muslims across the country”, Lalin Prasad. *The Pioneer, New Delhi, p. 8.*

**April 11** Begum Shehnaz Sidrat, president of Bazm-e-Khawateen filed her nomination for Lucknow seat with a premonition of a stinging fatwa from city clerics weighing on her mind. Politics, she was told, was not for a *purdah nasheen* (veiled woman). *The Times of India, New Delhi, p. 7.*

**April 12** Litterateur Vishnu Prabhakar, 97, died in a city hospital. His family donated his body to the All India Institute of medical Sciences (AIIMS). Honoured with the Padma Bhushan and Sahitya Akademi awards, Prabhakar worked as a drama director in All India Radio from 1955 to 1957. His famous works include *Awara, Masiha, Pankheen, Jane Anjane, Dhalti Raat, Swapnamayi, Nav Prabhat* and *Doctor*, besides *Ardhanarishwar* for which he was awarded by Sahitya Akademi. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 1.*

**April 13** Indraprastha Sahitya Bharati and Sanskritik Gaurav Sansthan jointly organised a symposium in New Delhi on the relevance of *Ramrajya* as envisioned by Goswami Tulsidas. Noted poet and social thinker Dr Swami Shyamananda Saraswati presided over the symposium, which was inaugurated by Swami Anand. Chief guest Swami Dayananda Saraswati from Murthal, Haryana, said the present politics of the country was highly poisonous and it has to be purified before restoring the *Ramrajya*. Dr Vinita Kumari of Delhi University presented a comparison between *Ramrajya* and *Ravan Rajya*.

**April 16** Armed militants have occupied four homes of members of the minority Sikh community in Pakistan’s Aurakzai tribal region near the Peshawar, a media report. There is a sizeable number of Sikhs living in Peshawar and adjoining semi-autonomous tribal regions. *The Indian Express, New Delhi, p. 12.*

\_\_\_\_\_ The law, passed last month in Afghanistan, says a husband can demand sex with his wife every four days unless she is ill or would be harmed by intercourse—a clause that critics say legalizes marital rape. It also regulates when and for what reasons a wife may leave her home alone. *The Times of India, New Delhi, p. 14.*

\_\_\_\_\_ Congress ridiculed the senior BJP leader and prime ministerial candidate for being an “RSS slave”. Congress chief Sonia Gandhi told an election rally. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

\_\_\_\_\_ Arunachal Pradesh has reacted with shock over ‘China’s move to block India’s \$60-million project for the state at the Asian Development Bank (ADB), citing the state as a “disputed territory”. *The Indian Express, New Delhi, p. 7.*

**April 17** Russia ended an anti-terror operation in Chechnya that has been in place for a decade, amid growing stability in the territory torn by two wars since the collapse of Communism. Russian forces defeated separatist rebels who had gained control of the majority Muslim region. *The Times of India, New Delhi, p. 18.*

\_\_\_\_\_ Members of Pakistan’s Sikh community living in the Aurakzai tribal region have paid Rs 20 million as ‘jazia’. The Taliban demanded Rs 50 million as ‘jizya’ – a tax levied on non-Muslims living under Islamic rule, but the militants finally settled for Rs 20 million. Militants forcibly occupied some of their home and kidnapped a Sikh leaders. *The Tribune, New Delhi, p. 13.*

\_\_\_\_\_ A dissolute Pakistan is virtually begging donor countries to help it out to save its economy, and reforms and to fight terrorism. So Tokyo will write out a billion-dollar cheque to Islamabad. *The Pioneer, New Delhi, p. 9.*

**April 18** Even as the BJP resolved to utilize Varun Gandhi for campaigning across the country, the young leader out after spending 20 days behind bars for on alleged hate speech, said he would continue to raise his voice “against anti-national elements.” *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

**April 19** US intelligence, defense and diplomatic officials have concluded that a disaster is in the making on the scale of the Iranian revolution, said a US intelligence official. *The Times of India, New Delhi, p. 13.*

**April 20** Radical cleric Sufi Muhammad, who played a crucial role in enforcing Islamic law in Pakistan’s, said there is no room for democracy in Islam and that no one could appeal against the verdict of Sharia courts. The existing system contravenes Islam and the *Quran*, he claimed. Asserting that there is no room for democracy in an Islamic system, he claimed Pakistan’s rulers are appeasing the West by thrusting the system of “*kafirs*” or infidels on the people of the country. *The Indian Express, New Delhi, p. 12.*

\_\_\_\_\_ The issue of black money parked abroad in secret bank accounts is fast turning into the main bone of contention between Congress and BJP. BJP’s Arun Shourie said that Congress’s reactions of Advani’s assertions that his party would bring back the money if voted to power betrayed panic. *The Times of India, New Delhi, p. 11.*

\_\_\_\_\_ New research suggests the Chinese nuclear tests from 1964 to 1996 claimed more lives than those of any other nation. Jun Takada, a Japanese physicist, has calculated that up to 1.4 million people were exposed to fallout and 190,000 of them may have died from diseases linked to radiation. The victims included Chinese. Uighur Muslims and Tibetans, who lived in these remote regions. *The Times of India, New Delhi, p. 16.*

**April 21** Indian ambassador Rakesh Sood met Nepal PM Pushpa Kumar Dahal ‘Prachanda’ to protest against his decision to sack the chief of the Nepalese army, Rukmangud Katawal. India fears this is the precursor to pushing in thousands of Maoist guerrilla fighters into army, which it believes would have disastrous consequences. *The Times of India, New Delhi.*

\_\_\_\_\_ The BJP has complained to EC against PM Manmohan Singh for allegedly violating the model code of conduct by asserting that poor Muslims have priority claim over the nation’s resources. *The Times of India, New Delhi, p. 13.*

**April 22** India successfully launched a new-age all-weather Radar Imaging Satellite, RISAT-2 that would not just significantly enhance the country's capability for earth observation but could also be used for surveillance purposes. *The Indian Express, New Delhi, p. 7.*

\_\_\_\_\_The Orissa Police arrested P. Rama Rao alias Uday, a top-ranking CPI-Maoist leader who allegedly masterminded the killing of Vishwa Hindu Parishad activist Swami Laxmanananda Saraswati in Kandhamal district in August 2008. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 13.*

\_\_\_\_\_ Alarmed at the rapid development of infrastructure across the border, the Army is also pushing for the construction of a rail link to the Ladakh region through Himachal. A senior officer confirmed that the need for an "all time connectivity" of the region with the rest of the country was one of the main points being discussed at the conference. *The Indian Express, New Delhi, p. 2.*

**April 23** BJP manifesto-Its preface of B.J.P. Manifesto truly represents the glorious past of our Indian polity. Today's politics should follow those high values. Bharat has been a spiritual nation since time immemorial and this election manifesto is a step to restore that glory, says Ashok Singhal, president of VHP. *The Indian Express, New Delhi, p. 11.*

**April 24** The 4,000 year-old Indus Valley civilization that thrived on the Indo Pak border might have been a literate society which used a script close to present day languages like Tamil, Sanskrit and English, reveals a new finding announce. *The Time of India, New Delhi, p. 17.*

**April 25** Clinton suggested, following up on the broad US prescription and advice to Pakistan that its grave domestic situation, and not India, constituted the biggest danger to its existence. *The Times of India, New Delhi, p. 20.*

\_\_\_\_\_The Vishwa Hindu Parishad (VHP) came out in open to support the BJP in the midst of the Lok Sabha election saying it was the only party that can guarantee safeguarding the interest of the Hindu polity. A Press note, quoted its president Ashok Singhal as saying that, "This can only be possible if 100 per cent people religiously go out to vote in spite of the intense summer heat." *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

\_\_\_\_\_ Even as the US remains focused on concerns over the Taliban's relentless advance towards Islamabad, Pakistan is increasing its capacity to produce plutonium at its Khushab nuclear facility a Washington-based science think tank has reported. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

\_\_\_\_\_ Ahead of polls in the capital, the intelligence has been sent to various states and the Delhi Police has been asked to strengthen security around the party offices of BJP, RSS and VHP in the capital. *The Times of India, New Delhi, p. 6.*

\_\_\_\_\_ Medical superintendents in Delhi government hospitals are in the firing line since Health Minister Kiran Walia took charge in December last year. As many as five medical superintendents have been shown the door for "dereliction of Duty" in the past four months in Walia's visits for surprise inspection of facilities at six hospitals. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

**April 27** Prime Minister should be elected by people. He should not be nominated from Rajya Sabha. Yoga Guru Baba Ramdev said this while addressing a seminar in the national capital. He should have public mandate to lead the nation. *The Pioneer, New Delhi, p. 2.*

**April 28** In a bid to intensify people-to-people contact, China and Pakistan have decided to open up the historical Khunjerab Pass connecting the two countries. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

\_\_\_\_\_ Over the past two years, Pakistani civil society has driven a military dictator from power and managed to force an elected government to restore our top judges to the bench. But when it comes to the Taliban, it seems incapable of speaking with one voice. *The Indian Express, New Delhi, p. 11.*

**May 1** Contrary to the Orissa police's claim that a postmortem was conducted on the bodies of slain VHP leader Laxamananda Saraswati and four others, the scientific officer engaged in the probe, on denied any knowledge of it. *The Indian Express, New Delhi, p. 2.*

**May 4** A fortnight-long stalemate in Nepal came to an end with the sacking of army chief Gen Rookmangud Katawal. However, he refused to receive the letter saying that he would accept it if it comes

through proper channel. It was not clear if Lt Gen Kul Bahadur, appointed in his place by the Maoist-led government, has taken over the charge. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

**May 5** A top aide to Iran's supreme leader called the country main opposition figure a US agent and said in an editorial he should be tried for committing crimes against the nation. *The Pioneer, New Delhi, p. 7.*

\_\_\_\_\_ Tehran: A top aide to Iran's all-powerful leader has accused the country's main Opposition Leader of being an American agent who should be tried for treason, increasing the pressure on reformists disputing the outcome of last month's presidential election. There was no immediate reaction from Mir Hussein Moussavi to the accusation in an editorial in the conservative daily newspaper *Khayan*. The editorial, by Hossein Shariatmadari, a top aide to supreme leader Ayatollah Ali Khamenei, raised the possibility that Moussavi could be arrested and charged like many other pro-reform figures. *The Indian Express, New Delhi, p. 15.*

**May 8** Accusing the Sri Lankan government of demolishing more than 500 Hindu temples in the island nation, VHP leader Ashok Singhal said Hindus in Sri Lanka were being evicted from their homes. *The Tribune, New Delhi, p. 2.*

**May 9** While India was inviting popular opprobrium in Nepal, trying to prevent Maoist PM Prachanda from sacking the army chief, China at the same time sent messages to Prachanda pledging support for doing just the opposite! *The Times of India, New Delhi, p. 14.*

\_\_\_\_\_ Britain's High Court has turned down a bid by a devout Hindu for the legal right to be cremated on a traditional open-air funeral pyre. With the judgement, the expectation of the Hindu community in the UK for designation of natural cremation sites around the country dashed. *The Pioneer, New Delhi, p. 12.*

\_\_\_\_\_ Students of West Bengal's Visva Bharati University will no longer be able to write their examination papers in Bengali. The decision has shocked the Intelligentsia and the state government alike. *The Mail Today, New Delhi, p. 4.*

**May 11** With Jupiter changing its position and entering a new zodiac sign-from Capricorn to Aquarius-astrologers predict good times for Indian economy, but also warn against political turbulence in the days ahead. If astrologers are to be believed, the new government formed after May 16, would not last for more than one-and-a-half years and there are strong indications for another general election in late 2010 or early 2011. *The Times of India, New Delhi, p. 9.*

**May 12** A total of 3.6 lakh have fled their homes in northwestern Pakistan in the last week, the United Nations estimated. This is in addition to the five lakh displaced in previous bouts of fighting. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 1.*

**May 16** Panun Kashmir announced the formation of its woman's wing. The Daughters of Panun Kashmir here today. The formation of the women's wing was made in a large convention of about hundred women activists attended by leaders of Panun Kashmir and its convener, Dr. Agnishekhar. *The Kashur Gazette, New Delhi, p. 5.*

**May 21** Himachal Pradesh Chief Minister Prem Kumar Dhumal categorically said that the BJP had stood its grounds in the Lok Sabha poll and the verdict was not against the BJP but against the 'blackmailing' tactics adopted by the Left and its allies to destabilise the Government at the Centre. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

**May 22** A heavy bombardment by asteroids the size of Ireland was not enough to wipe out life on Earth 3.9 billion years ago, researchers said in a finding that turns back the clock of life by 500 million years. *The Times of India, New Delhi, p. 17.*

**May 23** The first of the three Indian Air Force (IAF) Airborne Warning and Control system (AWACS) will finally arrive in India on May 25. "The Israeli-built AWACS system in arriving in India on May 25 and will be inducted in the IAF on May 27", an IAF officer said. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

**May 25** Not with standing Pakistan Government's claim than Taliban is its enemy number one and not India, the neighbouring country's notorious spy agency - Inter-Services Intelligence (ISI) - has been funding 400 to 500 *madrassas* in the Swat valley and supplying textbooks with anti-India and anti-Hindu rhetoric. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

**May 26** India had refused to supply offensive weapons to Sri Lankan military during its campaign against the LTTE, forcing Colombo to turn to China for purchases. This, he said, had led Colombo to approach Pakistan, China and Russia for meeting its urgent needs. *The Indian Express, New Delhi, p. 12.*

**May 27** The BJP in Orissa is in stocktaking mode with Rajya Sabha MP Chandan Mitra and national vice-president Karuna Shukla meeting the party MLAs and district presidents. Many senior leaders think it a good occasion to remember the party's performance in the 2004 Assembly polls when it won 32 seats. *The Indian Express, New Delhi, p. 2.*

\_\_\_\_\_ The state government has given permission for another private university in Kangra district. The government has given letter of sanction to Sai Group of Institutions to open up a private university in the district near Palampur. *The Tribune, New Delhi, p. 9.*

\_\_\_\_\_ Hundreds of rioters rampaged through a town centre last night after a march against Muslim extremists, the Daily Express reported. They were opposing the Muslim fanatics who had jeered Briton squaddies returning from Iraq. *The Tribune, New Delhi, p. 17.*

\_\_\_\_\_ The BJP actually failed in presenting itself as a better alternative to offer stability and a national vision. After the results, L.K. Advani (82) had said "people have voted for bipolar polity-having two main parties" and indicated that correctives would follow. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 10.*

**May 28** In the first post-poll stock-taking meeting with state BJP functionaries and party leaders from MCD and Delhi Assembly at its headquarters in Kesav Kunj, RSS veterans Sohan Singh and Ishwar Das Mahajan urged party MLAs and organisation office-bearers to make a collective effort to rebuild the BJP base. *The Times of India, New Delhi, p.5.*

**May 29** The Australian government announced a series of measures to ensure the safety of Indian students. These steps came a day after India issued a strong statement of concern over the incidents. There were many reports of assaults and burglary of Indian students in Australia. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

\_\_\_\_\_ Jaffna, where Swami Vivekananda delivered speech on Vedantism in 1897, prided upon being the chief centre of Hinduism in Sri Lanka. Its leading school is curiously named Jaffna Hindu College. In 1981, the Tamil community pooled thousands of books, to rebuild the library when the civil war caught up in 1983. In 1985 again, the semi-built library bore assault of Sri Lankan Army. However, Sinhalese authorities profoundly repented their act. After, Jaffna was wrested from the LTTE in 1996 the then President Chandrika Kumaratunga got it rebuilt. But the loss inflicted was irreparable. Reopened in 2003, it is marked by a statue of goddess Saraswati in the portico. *The Pioneer, New Delhi, p. 8.*

\_\_\_\_\_ We often hear that young adults have no interest in history. But the popularity of historical movies proves that it's not so. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 8.*

**May 30** India came down heavily on Organisation of Islamic Conference (OIC) for its statement pledging support to the cause of "freedom struggle" in Kashmir. Stating that the OIC had no business to issue such a statement, the foreign ministry also expressed dismay at the organisation describing the 26/11 terrorist strike in Mumbai merely as an "incident". *The Times of India, New Delhi, p. 19.*

\_\_\_\_\_ Chairman of the minority cell, Shahnawaz Husain admitted his failure to influence any nationwide significant change in the pattern of Muslim votes, who tend to vote against the BJP considering it a communal party. *The Tribune, New Delhi, p. 18.*

\_\_\_\_\_ \$736 million to build a new US embassy in Islamabad, along with permanent housing for US government civilians and new office space in the Pakistani capital. *The Tribune, New Delhi, p. 19.*

## Select Articles

**Behenji and Bane-ji : Jug Suraiya, The Times of India, New Delhi, April 1, 2009, p. 18.**

Why does urban middle-class India hate Mayawati so much? In a recent poll, over 70 per cent of the respondents said that they would be horrified if she were to become India's next prime minister.

**Elections generate little hope : JS Rajput, The Pioneer, New Delhi, April 1, 2009, p. 9.**

Politicians tend to place their own narrow interests, as also those of their party, above the interests of the nation and the people. It is not surprising that young voters are listless as the general election draws closer.

**True colours of communalism : Sandeep B, The Pioneer, New Delhi, April 2, 2009, p. 9.**

While Muslims League demanded and got a separate country, the Hindu Mahasabha was reprimanded for fighting against this very demand of dividing India.

In a *Secular Agenda*, Mr Arun Shourie captures the essence of Indian secularism in just a line: "Indian secularism consists of branding others communal." In an India modeled on a secularism that grew in Nehru's garden, the term 'communal' and its variants are designer profanities exercised against anybody remotely espousing genuine Hindu causes.

**Blind about black money : Anuradha Dutt, The Pioneer, New Delhi, April 3, 2009, p. 9.**

National interest demands that every political party should support the BJP for raising the issue of money being parked in Swiss banks and tax havens. But they have responded with cynicism.

**Brajboomi-Restoring lost glory : Deepak Kumar Jha, The Pioneer, Agenda, New Delhi, April 5, 2009, p. 2.**

Deepak Kumar Jha discovered a commendable water conservation exercise involving the restoration of ancient *kunds* (ponds), an effort steered by people's participation through non-governmental organizations to return the land of Lord Krishna to its lost glory.

**War theatre, Emerging around India : Dina Nath Mishra, The Pioneer, Forays, New Delhi, April 5 2009, p. 5.**

India is becoming more and more vulnerable with the numbers of *ihadis* and *Taliban* increasing in the neighbouring country day-by-day. The need of the hour is a strong Government at the Centre otherwise India's peace and tranquility may be jeopardised.

**'What's wrong in being proud of your faith?' : Ravi Bajpai, The Mail Today, New Delhi, April 7, 2009, p. 16.**

On his religious affiliations and "What's wrong in being proud of your religion? Those who object to this don't understand that Hinduism is a way of life."

Prem joined the RSS in 1940 and shot to fame when he defeated Congress stalwart HKL Bhagat by 68,000 votes in the 1991 Lok Sabha elections, following it up with an even bigger win in 1996.

**Muslims must elect Muslims : N Jamal Ansari, The Pioneer, New Delhi, April 7, 2009, p. 9.**

So, what should the Muslims do? How should they regain the lost ground in the political arena? How should they make their presence felt?

The twin aim of Muslims should be to shake up the established secular parties and create a political disbalance that gives them bargaining power. The pressing need of the hour is for Muslims to break free of political bondage.

**Let there be debate : Rajiv Dogra, The Pioneer, New Delhi, April 8, 2009, p. 9.**

Why is Manmohan scared of debating issues with Advani?

The history of debate and skepticism in India goes back to our earliest scriptures, the *Vedas*. In the *Rig Ved*, the hymn of creation asks: "whence it all came; and how creation happened?" The answer is provided in the next stanza itself-it may be tentative but it is clear. In the *Bhagvat Gita*, Arjun's questions and Krishna's responses are in the finest tradition of a debate.

**It's Hell Next Door : G. Parthasarathy, The Times of India, New Delhi, April 8, 2009, p. 18.**

Pakistan's descent into chaos calls for a rethink of our strategy. India will have to face up to the reality of the growing radicalisation across its western frontiers, rather than entertaining illusions that civil society or political parties in Pakistan have the ability, or will, to take on the radicals.

**Bogus claims of Congress : Gautam Mukherjee, The Pioneer, New Delhi, April 8, 2009, p. 9.**

This general election is not just about 'unity' and 'divisiveness', about 'secularism' and 'communalism', as the Congress would have us believe. The Congress speaks of 'unity' as an euphemism for appeasement and lets terrorists roam this land and strike at will. Its unabashed poll-time talk of 'unity' is both appalling and sinister.

**Can't have it both ways : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, April 14, 2009, p. 8.**

There is merit in the Shiv Sena sentiment that the AK-47 wielding Ajmal Amir Kasab, caught on CCTV straddling Chhatrapati Shivaji Terminus where he and an associate slaughtered 55 people in cold blood, and later captured alive due to the personal valour of ASI Tukaram Omble, deserves no defence.

**When a big tree fell : Kanchan Gupta, The Pioneer, New Delhi, April 14, 2009, p. 9.**

Manmohan Singh and Congress suffer from selective amnesia as they rake up the 2002 Gujarat violence to malign the BJP. But even if they choose to forget the 1984 pogrom that left more than 4,000 Sikhs dead, the story remains fresh in the minds of many, among them survivors waiting for justice for 25 years. "We know the people were very angry and for a few days it seemed India had been Shaken. But when a mighty tree falls, it is only natural that the earth around it does shake a little" – Rajiv Gandhi, November 19, 1984.

**Pakistan sliding into chaos : G. Parthasarathy, The Tribune, New Delhi, April 16, 2009, p. 8.**

Even as Islamabad plays diplomatic games, the situation within Pakistan is spiraling out of control. The Army itself is getting radicalised reflecting sociological trends within the Punjabi heartland. Moreover, the Punjabi military elite in Pakistan does not relish the prospect of fighting Pashtuns. It is, therefore, unrealistic for the Americans to expect that the Pakistan Army has either the will or the inclination to deal with the Pashtun Taliban.

**Hizbullah plots coup in Cairo : P David Hornik, The Pioneer, New Delhi, April 16, 2009, p. 9.**

Egypt has uncovered an espionage ring set up by Hizbullah with Iran's help. Its purpose was to destabilize the Mubarak regime, writes P David Hornik.

**All the prime minister's men : Inder Malhotra, The Indian Express, New Delhi, April 17, 2009, p. 11.**

Nehru repeatedly failed to get his way in deciding the incumbent at Rashtrapati Bhavan. Differences between Nehru, the life and soul of the Congress leftwing that then included both socialists and communists, and Prasad, a pillar of the party's rightwing, led by Vallabhabhai Patel, went back a long time. These became acute at the time of Independence and Partition. Prasad was not a revivalist like Tandon. He was also opposed to theocracy. But as an "orthodox Hindu" he wanted the Indian state to be "symbolic of the Hindu majority" Nehru would have none of this, and began to believe that Prasad was "less secular than even Patel". No wonder then that he did not want Prasad to be the president when India became a Republic. Rajaji was therefore reluctant to join the race for presidency. Indeed, he astounded the prime minister by suggesting that Nehru should become president and Patel prime minister.

**How the Gods came down : Raaja Bhasin, The Pioneer, Agenda, New Delhi, April 19, 2009, p. 3.**

Unlike many of the other great mountain ranges of the world that were considered as the home of trolls and demons, the Himalayas, traditionally, have never been eyed with trepidation or fear-even if an element of awe always remains. Raaja Bhasin documents a few legends in this piece of writing. It refers to *Kailash Mansrover*, *Sudershan Parbat* and others.

**The League politics : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, April 20, 2009, p. 9.**

April 10, Shahi Imam, Syed Ahmed Bukhari, said that the time has come to float a new political party led and commanded by the Muslims themselves. The call was for a party of the Muslims, by the Muslims, for the Muslims. Is it not call for further division of India and a return to Muslims League politics since 1906?

**Black money haunts Congress : S Gurumurthy, The Pioneer, New Delhi, April 21, 2009, p. 9.**

The manner in which a bold initiative to unearth Indian black money lying abroad was aborted by the then Congress Government in the 1980s was suggestive. Then, as now, the party leadership acted as if it had skeletons to hide.

**A lie split wide open : Sandeep B, The Pioneer, New Delhi, April 22, 2009, p. 9.**

With every new finding on the post-Godhra riots exonerating the Modi Government and exposing the fabrications of Teesta Setalvad, the latter's 'fight for justice' stands exposed.

- The horrendous allegations made (by Citizens for Justice & Peace) were false.
- Cyclostyled affidavits were supplied by a social activist and the allegations made in them were untrue.
- Witnesses were tutored to present false testimony to the court.
- Incidents that didn't actually occur were manufactured.

**Time for change has come : Dmitry Kosyrev, The Pioneer, New Delhi, April 23, 2009, p. 9.**

Whoever wins the Lok Sabha election, India's foreign policy is bound to become more clearly defined. Its security concerns encourage contacts with the US and China rather than with Russia. Moscow will come third, and only if it is not at loggerheads with Washington, DC, or too friendly with Beijing.

**Flawed intelligence gathering, Need to revamp the system : Brig Gurmeet Kanwal (retd) : The Tribune, New Delhi, April 24, 2009, p. 8.**

In the prevailing "proxy war" scenario, where the line between conventional military operations and sub-conventional conflicts, including terrorism, is blurred, accurate intelligence assessments are necessary.

**When attacked, we must hit back : Vir Sanghvi, The Hindustan Times, New Delhi, April 26, 2009, p. 10.**

All opinion polls suggest that the average Pakistani hates India, loves Osama bin Laden and believes that 9/11 was a Jewish plot to malign global Islam. Worse still, the evidence suggests that if you push the Pakistani masses about their true identity they would pick Muslim over Pakistani. Do you have to be a genius to see that the good neighbour policy has been an utter and complete disaster?

**Welfare is wisdom : Ishtiyaque Danish, The Times of India, New Delhi, April 26, 2009, p. 19.**

On the one hand, it has signed an agreement with the Taliban; meanwhile, it bombs Taliban targets in other parts of the country. It almost appears to be a clever move to use the Taliban threat to secure billions of dollars in aid. But perhaps such strategies too have nothing to do with *Shariah*.

**Palestinian road block : Barry Rubin, The Pioneer, New Delhi, April 28, 2009, p. 9.**

It's silly to assure Israel that peace will bring it greater security when it's unclear whether the Palestinian Government would be taken over by Hamas; wage another round of warfare, fire missiles and be 'unable to stop' cross-border attacks' and invite in Iranian or Syrian troops. That kind of two-state solution would be far worse than the *status quo*.

**Malaysia does a yo-yo act : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, April 28, 2009, p. 8.**

Malaysia has sent mixed signals to its beleaguered Hindu citizens regarding its commitment to freedom of religion and human rights, In a move to ease social tensions, Kuala Lumpur has banned the conversion of children (to Islam) without the consent of both parents. This welcome decision follows the sensational case of Indira Gandhi, a 34 year-old Hindu of Indian origin, whose estranged husband embraced Islam and converted both their children to that faith without her consent.

**Seeking Spiritual Anchor : Tarun Vijay, The Times of India, New Delhi, April 29, 2009, p. 18.**

Deendayal Upadhyaya, while presenting his theses on 'Integral humanism', stressed the spiritual urge of society, where the individual is part of the whole and the whole is reflected in individual actions as dharma. This relegates materialism, which predominates in capitalism and communism, to a secondary position.

**With options closed, Muslims to vote Congress : Parvaiz Sultan, The Pioneer, New Delhi, April 30, 2009, p. e.**

'We wish there were non-Congress candidates who could defeat BJP'

Regardless of their grievances, the minority electorate has made up its mind to vote for the Congress as they find no suitable alternative in the Capital as of now.

**Power play in Afghanistan : G. Parthasarathy, The Tribune, New Delhi, April 30, 2009, p. 8.**

The unrestricted Chinese supplies (of fighter aircraft, naval frigates, etc) have undermined international efforts to persuade Pakistan to end its support for the Taliban and other terrorist groups.

**PM's intolerable moralising : Kanchan Gupta, The Pioneer New Delhi, May 10, 2009, p. 4.**

Manmohan Singh persists with his sanctimonious, self-righteous and intolerably smug pronouncements although his sententiousness increasingly rings hollow. One comment of the Prime Minister stands out for its sheer duplicity in the waffle that was billed as an exclusive interview by the *Hindustan Times* last week. It pertains to India being shamed before the world on account of the riots that occurred in Gujarat in 2002.

**Seize the divine moment : Francois Gautier, The Pioneer, New Delhi, May 15, 2009, p. 9.**

As in a human being, a nation can choose the *dharmic* path or an *adharmic* one. The *dharmic* path, whatever the pitfalls, ensures the survival of the soul of a nation - which has been India's story so far; and the *adharmic* one, the fall of even the greatest of civilisations, whether Rome, Greece or Egypt. Today for Indians, *dharma* is choosing between forces that are attacking India's spiritual legacy and forces which will help preserve it.

**BJP must nurture young leaders : Priyadarshi Dutta, The Pioneer, New Delhi, May 21, 2009, p. 8.**

A political party for the Hindus that shies away from using the word Hindu in its title would sooner or later degenerate into a poor copy of the Congress. That was how Veer Savarkar responded to Syama Prasad Mookerjee's proposal to start the Bharatiya Jana Sangh in 1952.

In the downfall of the party, the BJP first lost its think-tank comprising people such as Govindacharya and economist Jay Dubashi. Then came the ascendancy of Promod Mahajan and his five-star culture, while the party's mass leaders like Mr Kalyan Singh, Mr Madan Lal Khurana, Mr Tapan Sikdar, and Ms Uma Bharati all fell out. The once youthful leader of the BJP grew old but the party did not renew its young sheaf.

**It's Mousavi vs Khamenei : Borzou Daragahi, The Tribune, New Delhi, May 25, 2009, p. 11.**

Mousavi is credited for steering Iran well during the years of war with Iraq. An absorbing article on the profile of the two leaders.

**North Korea and the test for China, Inside the Dragon : Reshma Patil, The Hindustan Times, New Delhi, May 29, 2009, p. 18.**

Richard Bush, an expert on North Korea and China at the Washington-based Brookings Institution told *Bloomberg*: If China was really serious it could probably bring the country to its knees. But North Korea doesn't look worried.

**Nurturing communalism : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi.**

Criminals have public support and community leaders are ready to espouse their cause. That is why many politicians think that one Muslim vote is worth double a Hindu vote.

## **Book Reviews**

**Translated and edited by Bao Pu and Renee Chiang and Adi Ignatius : Prisoner of the State-the secret journal of premier Zhao Ziyang, Simon & Schuster, 336 pages.**

The plaintive final public appearance of Zhao Ziyang on Tiananmen Square on May 19th 1989 was the curtain call marking the end of a power struggle that had been raging for weeks around the squalid encampment of student protesters in central Beijing. Zhao was then still general secretary of the Chinese Communist Party, but he had lost the battle with his hard-line rivals. He dies under house arrest four years ago, largely forgotten by the many inside and outside China who were mesmerised by the country's economic boom and wanted to forget the bloody culmination of the Tiananmen unrest.

Now Zhao's insights into this struggle (secretly recorded on cassette tapes and smuggled out to friends) have been translated into English and compiled into a book. Until the appearance of this posthumous work, not a single voice of dissent had even emerged from the party's inner circle, even from someone like Zhao who had been booted out from it. Since the crushing of the protests, notwithstanding China's rapid integration with the global economy, the interaction of its leaders has been veiled in even greater secrecy than it was 20 years ago.

However, even if the book contains few startling revelations, it is fascinating for the way it conveys the flow of power in China at that time. Zhao may have been the party's leading official, but it was Deng who ruled China from semi-retirement in his Beijing courtyard home. Leaders vie for Deng's attention, struggling to glean the wishes of the

84-year old (transmitted sometimes by a daughter or his secretary). At one point Deng's deafness makes it difficult for Zhao to be sure that he has got his message across.

*Courtesy - The Indian Express, New Delhi*

## Letter

### Change Bhagwat ke Sangh

RSS augurs Hindu awakening: A scholarly analysis of the challenges before the Rashtriya Swayamsevak Sangh and its leadership in the changed social scenario. Sangh's Hindu awakening endeavour has a bearing on the destiny of the nation and one hopes the Sangh under the new Sarsanghachalak will strive even more efficiently towards excellence in all fields of individual and collective activity so that the nation can constantly rise to higher levels of endeavour and achievement.

*-Srihari*

Truly nationalist: Regardless of all that is said in derision by the media, particularly electronic media, the RSS is the only nationalist outfit that has a holistic view of Bharat. At the time of every calamity-be it the war to drive out Pakistani intruders from Jammu & Kashmir in 1948 or the Hyderabad Razakar Movement or the 1977 floods in Andhra Pradesh, the earthquake in Gujarat, the super-cyclone in Orissa or the more recent tsunami-the RSS has risen to the occasion.

*-Srinivasan Balachandran*

The third eye: For the first time I have read a scholarly and unbiased analysis of change at the top level in the RSS from an outsider. This kind of unbiased analysis of the Indian political scene is what sets Mr Swapan Dasgupta apart from other pseudo intellectuals.

*-Ratan Sharda*

Best wishes: I am not a RSS member, but being a nationalist I support its causes. Best wishes to the RSS under its new leadership.

*-Tathagata Mukherjee*

### Congress deals Muslim card

What double standards! The Congress has always shown double standards to unabashedly save its vote-bank while accusing the BJP of playing the communal card. Can the Congress deny that Rajiv Gandhi conducted 'shilanyas' at Ayodhya and promised 'Ram rajya'? If the BJP does the same, the Congress terms it 'communal'. But the minorities can't be fooled by this duplicitous party! The Congress has become a 'private limited company' sans principles with a single point agenda of coming to power.

*-A Seshagiri Rao (Pioneer, New Delhi. )*

### Brave new Indo-Pak chapter as words go behind enemy lines

Col Harish Puri wrote an open letter, man-to-man, soldier-to-soldier, to Pakistani Army Chief, Gen Pervez Ashraf Kiyani.

"Dear Gen Kayani," it begins: "Sir, let me begin by recounting that old army quip that did the rounds in the immediate aftermath of WWII: To guarantee victory, an army should ideally have German generals, British officers, Indian soldiers, American equipment and Italian enemies."

He Continues: "A Pakistani soldier that I met in Iraq in 2004 lamented the fact that the Pakistani soldier in Kargil had been badly let down firstly by Nawaz Sharif and then by the Pakistani officers' cadre. Pakistani soldiers led by Indian officers, he believed, would be the most fearsome combination possible."

Pakistani respondents fumed that this was the first of many subtle and insidious insults.

Col Harish Puri, in a letter to Pakistani Army Chief, Gen Pervez Ashraf Kayani compares the photograph of the Pakistani surrender in Dhaka in 1971 with the recent video of a teenage girl being flogged by Taliban, and says the latter incident "represents an even more abject surrender by the Pakistani Army."

Two weeks later, the retired Indian officer is still getting angry hate mail from Pakistan (and congratulatory letters from Indians) for what some – even Pakistanis – consider a brilliant hatchet job. Col Puri said in an interview from Pune, "Many of them are from Pakistanis who say I have written what needs to be said."

*-Chidanand Rajghatta  
The Times of India, New Delhi.*

## सांस्कृतिक गौरव संस्थान के प्रकाशन

पुस्तक का नाम	मूल्य		
1. विश्वव्यापी भारतीय संस्कृति लेखक : श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा	95.00		
2. स्मृतियों में भारतीय जीवन पद्धति लेखक : श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा	90.00		
3. इस्लाम के सैनिक पुरुषोत्तम	20.00		लेखक : श्री
4. मुस्लिम राजनीतिक चिंतन और आकांक्षाएं की घातक गतिविधियां कर्नल श्याम कुमार, अनुवाद: डॉ. युद्धवीर सिंह	30.00	7.	लेखक.: अयोध्या
विवाद का हल : डॉ. सुरेन्द्र	20.00		
8. श्रीराम जन्म भूमि सच जानिए ! मूल कर्तव्य	140.00	9.	हमारे
लेखक : डॉ. विजय नारायण मणि त्रिपाठी	80.00	10.	भारत में
सेक्युलर राजनीति	60.00		
11. हिन्दुत्व के स्वर : सत्य के दर्पण में लेखक : डॉ. कैलाश चन्द्र	75.00		
12. राम वन गमन स्थल : डॉ. राम अवतार शर्मा	25.00		
13. हिन्दुस्थान में मदरसे : श्री देवेन्द्र कुमार मित्तल	120.00		
14. The Nefarious Activities of Pak's I.S.I. लेखक : कर्नल श्याम कुमार	15.00	15.	The
Challenge of Truth - Through answers to some F.A.Q. - Focussed Awareness & Complete Truth बड़ा आकार (सचित्र)	120.00	16.	FACT
17. The Ayodhya Controversy: Dr. Surendra Problems & Policy Options Sh. B.P. Singhal	500.00	20.00	18. Minorities and The
19. Glory that is Hindutva Sh. B.P. Singhal	10.00		
20. Striving for progress of self destruction B.P. Singhal	10.00		Sh. 20.00
21. And You shall be set free (हिन्दी-अंग्रेजी) David Icke			